सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो0 बॉ0 नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

सितम्बर, 2011 वर्ष 10 अंक 07

ईद मुबारक

हो मुबारक आप को ईदे सईद
साल का हर रोज़ आए मिस्ले ईद
साल के हर दिन करें हम नेकियाँ
दूर सब या रब रहें बद बख़्तियाँ
नफ़्स और शैतान दुश्मन हैं खुले
या खुदा उन से अमां तेरी मिले
बस तेरी ताअत हमारा काम हो
ख़ल्क़ की ख़िदमत हमारा काम हो
भेजता प्यारे नबी पर हूँ दुरुद
हों सलाम उन पर हज़ारों या वदूद

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 727527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
ईद मुबारक	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	7
मदरसा	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी	9
मोमिन औरत की शान	मौलाना मुहम्मद सानी हसनी	10
इल्म की दो किस्में	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	13
वदाईया	इदारा	15
एक शिक्षार्थी की डायरी से	ए0 जे0 खान	16
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	18
अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	20
आदर्श शासक	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	23
मुस्लिम समाज	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	24
ज़ीकादा और हज़ का सफर	इदारा	26
इस्लाम पर दुश्मनों के हमले	डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	30
नये निज़ाम कें कयाम	मौ0 मुहम्मद वाज़ेह रशीद नदवी	33
अधूरा इन्साफ	एम0ए0 खान	36
अहले खैर हजरात से अपील	इदारा	38
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	39

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर—ए—बक़रह

अनुवाद : और जब कहा मूसा ने अपनी क़ौम से, अल्लाह फरमाता है तुमको ज़िब्ह करो एक गाय[1], वह बोले, क्या तू हंसी करता है[2], कहा, पनाह ख़ुदा की कि हूँ मैं जाहिलों में[3](67)। बोले, दुआ कर हमारे वास्ते अपने रब से कि बता दे हमको कि वह गाय कैसी है[4]। कहा, वह कहता है कि वह एक गाय है, न बूढ़ी और न बिन ब्याही, दरमियानी है, बुढ़ापे और जवानी के, अब कर डालो जो तुम का आदेश मिला है[5](68)। बोले कि दुआ कर हमारे वास्ते अपने रब से कि बता दे हमको कि कैसा है उसका रंग, कहा, वह कहता है कि वह गाय ज़र्द खूब गहरी है, उसकी ज़र्दी ख़ुशी देती है देखने वालों को(69)। बोले कि दुआ कर हमारे वास्ते अपने रब से कि बता दे हमको कि किस किस्म में है वह[6], क्यों कि उस गाय में शुब्हा पड़ा है हमको, और हम अगर अल्लाह ने चाहा तो जरूर राह पा लेंगे(70)। कहा, वह कहता है कि वह एक गाय है, मेहनत करने वाली नहीं कि जोतती हो ज़मीन को, पानी देती हो खेती को, बेएब है, कोई दाग़ उसमें नहीं[7], बोले, अब लाया तो ठीक बात है, फिर उसको ज़िब्ह किया और वह लगते न थे कि ऐसा कर लेंगे[8](71)। और जब मार डाला था तुमने एक व्यक्ति को, फिर लगे एक दूसरे पर धरने, और अल्लाह को ज़ाहिर करना था जो तुम छुपाते थे[9](72)।

तफ़्सीर (व्याख्या)

1. अर्थात याद करो उस समय को। बनी इस्राइल में एक आमील नामक व्यक्ति मारा गया था और उसका क़ातिल मालूम न होता था तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा, अल्लाह का आदेश है कि एक गाय ज़िब्ह करके उसका एक टुकड़ा मुर्दे पर मारो तो वह ज़िन्दा हो जाए और अपने क़ातिल का नाम बता दे। अल्लाह ने इस तरह उस मुर्दे को ज़िन्दा किया और उसने क़ातिल का नाम बता दिया कि उसके वारिसों ने ही धन की लालच में हत्या की थी।

2. क्योंकि ये तो देखा न सुना कि गाय के टुकड़ा मारने से मुर्दा हो जाए।

3. अर्थात ठट्ठा करना, बेवकूफ, जाहिलों का काम है, और वह भी अहकामें शरीआ में पैग़म्बर से कदापि सम्भव नहीं।

4. अर्थात उसकी आयु कितनी है और उसका हुलिया कैसा है, नव उम्र है या बूढ़ी।

5. अर्थात उस गाय को ज़िब्ह कर डालो।

6. अर्थात स्पष्ट रूप से बता दे कि वह गाय किस किस्म और किस काम की है।

7. अर्थात उसके अंगों में कोई नुक़सान नहीं, और उसके रंग में दूसरे रंग का दाग व निशान नहीं, बल्कि सारी ज़र्द है।

8. वह गाय एक व्यक्ति की थी जो अपनी माँ की बहुत सेवा करता था और नेक था। उस व्यक्ति से वह गाय मोल ली। इतने माल को इतने माल पर कि जितना उस गाय की खाल में सोना भर सके, फिर उसको ज़िब्ह किया और ऐसे लगते न थे कि इतनी बड़ी कीमत देकर ज़िब्ह करेंगे।

9. अर्थात तुम्हारे अगले बुज़ुर्गों ने आमील को मार डाला था। फिर एक दूसरे पर इल्ज़ाम धरने लगे। और तुम जिस चीज़ को छुपाते थे (अर्थात अपने ईमान की कमज़ोरी को या क़ातिल के हाल को) अल्लाह उसको ज़ाहिर करना चाहता है। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तरन्नुम

मौत पर खुदा की हम्द और "इन्नालिल्लाहि" पढ़ने की अहमियत

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि जब किसी के लड़के की मृत्यु हो जाती है तो अल्लाह अपने फरिश्तों से कहता है कि तुमने मेरे बन्दे के जिगर के टुकड़े की रूह निकाल ली? वह कहते हैं जी हाँ! फिर अल्लाह कहता है कि तुमने उसके दिल के टुकड़े को ले लिया? वह कहते हैं जी हाँ! अल्लाह पूछता है कि उस वक्त मेरे बन्दे ने क्या कहा? फरिश्ते कहते हैं कि उसने तेरी तारीफ की और इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ा। फिर हुक्म होता है कि मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम रखो बैतुल हम्द (यानी तारीफ का घर)।

(तिर्मिज़ी)

सवाब की उम्मीद में सब्र करना– हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि अल्लाह कहता है कि मेरे इस मोमिन बन्दे के लिए जन्नत के सिवा कोई बदला नही, जिसके महबूब को मैं ले लूँ और वह सवाब (पुण्य) की उम्मीद पर सब्र करे।

(बुखारी)

अल्लाह ही का है जो कुछ उसने लिया– हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 की एक बेटी ने आप सल्ल0 के पास कहला भेजा कि मेरा बच्चा मरने की हालत में है, आप तशरीफ लाएं। आप सल्ल0 ने उस आदमी से कहा कि तुम जाओ उनसे कहो कि अल्लाह ही का है जो उसने लिया, और उसी का है जो उसने दिया, उसके यहाँ वक़्त तय है। अतः तुम पुण्य के आकांक्षी रहो और सब्र करो।

(बुखारी–मुस्लिम)

आँसुओं और दिल के ग़म पर पकड़ नहीं– हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हज़रत साद बिन उबादा रज़ि0 का कुशलक्षेम पूछने गये। आप सल्ल0 के साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि0, साद बिन वक्कास रज़ि0 और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि0 भी थे। आप सल्ल0 रोने लगे। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को रोता देख कर और लोग भी रोने लगे। फिर आप सल्ल0 ने कहा, सुनो! अल्लाह आँसुओं पर और दिल के ग़मगीन होने पर अज़ाब नहीं करता। ज़बान की ओर इशारा करके कहा कि इसकी वजह से अज़ाब करता है या रहम करता है।

(बुखारी–मुस्लिम)

मौत पर आँसू निकालना रहम का नतीजा– हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 के पास आप का नाती (नवासा) लाया गया जिसका अन्तिम समय आ गया था, आप सल्ल0 के आँसू निकल पड़े, हज़रत साद रज़ि0 ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! ये क्या? कहा, ये अल्लाह की रहमत है, उसको अपने बन्दों के दिलों में पैदा किया और अल्लाह रहम करने वाले बन्दों पर रहम करता है।

(बुखारी–मुस्लिम)

शेष पृष्ठ .....12 पर

ईद मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

पाठकों को ईद मुबारक हो। अल्लाह करे साल का हर दिन ईद जैसी खुशियाँ लाए। एक ईद के मौके पर रियाज़ में रहा, सब लोग एक दूसरे से कहते थे, "कुल्लु आमिन व अन्तुम बिखैर" (पूरे साल तुम खैरियत से रहो) मैंने देखा, वहाँ लोग सेवय्यों से वाकिफ नहीं, वहाँ ईद की सुब्ह को खजूर से मुँह मीठा करने का रवाज है। मैं ईद से एक रोज पहले बाज़ार निकला कि कहीं सेवय्याँ मिलें तो लाऊँ, अहलिया साथ थीं, बहुत तलाश के बाद एक दुकान पर पैक सेवय्याँ मिलीं, खरीद कर लाया, उसमें हिदायत दर्ज थी कि पानी जब उबलने लगे तब उसमें सेवय्याँ डालें, पाँच मिनट के बाद अपनी पसन्द की मिठास के लिहाज़ से शकर डाल दें, मेवे वगैरह डाल दें और पाँच–दस मिनट के बाद उतार लें, सेवय्याँ तैयार हो गईं। ईद की सुब्ह को अहलिया ने देसी घी से बघार देकर पानी डाल दिया, जब तेज़ गर्म हो गया, अभी उबला न था कि सेवय्याँ डाल दीं, फिर तो सेवय्याँ पकती रहीं, मगर नारियल की रस्सी के रेशों की तरह अकड़ी रहीं मुलायम न हुईं। मैंने अहलिया से कहा तुमने हिदायत के मुताबिक़ न पकाया, दूसरा बघार दो, उन्होंने नये तौर से बघार देकर अदहन का पानी डाल दिया जब पानी खूब उबलने लगा तो सेवय्याँ डाली, पाँच मिनट में सेवय्याँ पक गईं, अब शकर और मेवे डाले गये, सेवय्याँ तैयार हो गईं, खाया मगर अपने यहाँ की तरह मज़ा न मिला, पता नहीं वह सेवय्यों का मैदा किस अनाज का था। इरादा था कि सऊदी दोस्तों को हिन्दी सेवय्यों के मज़े से अवगत कराऊँगा मगर जब वह मुझे खुद नहीं पसन्द आई तो दोस्तों को क्या पेश करता।

एक दोस्त के साथ उसकी गाड़ी पर ईद की नमाज़ के लिये निकला। मैंने दोस्त से कहा, पैदल चलना चाहिये, दोस्त ने बताया कि मुसल्ला बहुत दूर है, गाड़ी से चलना जरूरी है, फिर अभी आप को पैदल चलने का लुत्फ भी आजाएगा। मुसल्ला (ईदगाह) से एक किलो मीटर फासले पर गाड़ी रोक दी गई, आगे जाना मना था, इसलिए कि हज़ारों गाड़ियां थीं नमाज़ की जगह तक जाने देने में बड़ी बदनज़मी होती, बहर हाल गाड़ी पार्क करके दोस्त के साथ पैदल चल कर मुसल्ला तक गया, दिल में सोचा, पैदल चलने की सुन्नत भी अदा हो गई। मुसल्ला पहुँचा, थोड़ी देर में नमाज़ हुई, सन् 1982 की बात है, याद नहीं कि पहली रकअत में ज़ायद तक्बीरें कितनी कहीं गई और दूसरी रकअत में कितनी, लेकिन यह याद है कि एक रकअत में पाँच और दूसरी में सात कुल बारह ज़ायद तक्बीरें कही गई थीं।

ख्याल हुआ हमारे यहां उलमा ईद की नमाज़ के बाद में मुसाफहा और मुआनका को बिदअत कहते हैं और सऊदी के लोग तो बिदअत के सख़्त मुखालिफ़ हैं यहाँ कोई किसी से मुसाफा व मुआनका न करेगा लेकिन यह किया? सलाम फेरते ही चन्द पाकिस्तानी जो मेरे शिनासा थे मेरी तरफ झपटे और ज़बर दस्ती मुझे दबोच लिया और गले मिले मुसाफहा किया, पाँच मिनट में लगभग दस पाकिस्तानियों ने मुसाफा, मुआनका (गले मिलना) किया, उस पर मेरा दोस्त अभी दो सऊदियों से भी नहीं निपट पाया था, इसलिए कि

पहले वह एक दूसरे की पेशानी चूमते फिर कहते कुल्लु आमिन व अन्तुम बिखैर, फिर मुआनका करते फिर कहते "कुल्लु आमिन व अन्तुम बिखैर" फिर मुसाफा करते और एक दूसरे से खैरियत पूछते, और हर एक पूछता और जवाब देता, फिर दूसरे से यही अमल होता। बोसा लेने के उनके यहाँ दरजात हैं, शैख (बूढ़े या आलिम) की पेशानी चूमते हैं, सरकारी मनसब वाले का शाना चूमते हैं, बराबर वाले का एक दूसरे का गाल चूमते हैं, मेरा दोस्त जब सात आठ सऊदियों से मिल चुका तो मुझ से मिलते हुए कहने लगा कि सलामुकुम असहल मिन सलामिना (तुम लोगों का सलाम हमारे सलाम से सहल है) तुम दस पाकिस्तानियों से मिल चुके थे, उस वक्त मैं दूसरे शख्स से मिल रहा था। मैंने कहा हमारे यहां उलमा ईद की नमाज़ के बाद मुसाफे, व मुआनका को बिदअत कहते हैं। कहने लगा यह हमारी सक़ाफ़त व आदत है और बिदअत इबादत में होती है सक़ाफ़त में नहीं, मैं खामोश रहा। यह मैंने पाठकों की दिल चस्पी के लिये लिखा।

एक बात और बताता चलूं कि नमाज़ के लिये निकलने से पहले दोस्त के साथ फित्रे की अदायगी के लिये निकला, मेरा दोस्त एक मार्केट ले गया, जहाँ कुछ सऊदी बोरों में गेहूँ भरे बैठे थे और आवाज लगा रहे थे "ज़कात दो, ज़कात दो" उनके पास लोहे का एक गोल पीपा था, मालूम हुआ वह साअ (एक माप) था, वहाँ फित्रा एक शख्स की जानिब से एक साअ गेहूँ देते हैं, आधा साअ नहीं, जो आता बताता मुझे दस साअ देना है, कोई कहता मुझे बारह साअ देना है, दुकानदार फौरन नापता, करीब में कुछ काले जिस्म के लोग औरतें और मर्द बैठे थे, वह दौड़ते और गेहूँ ले लेते। मैंने देखा, थोड़ी देर के बाद वह गेहूँ दूकानदार के पास कम पैसों में वापस आ जाता, यह सिलसिला 29 रमजान से ईद की नमाज़ से कुछ पहले तक चलता। उनके यहां गहूँ की कीमत देने से फित्रा अदा नहीं होता, गेहूँ या खजूर दिया जाता। अगले साल मैंने ईद अपने घर की, मेरे दोस्त ने रमजान ही में कुछ पैसे मुझे भेजे और कहा जो गल्ला आप के यहां खाया जाता है वह खरीद कर ईद के रोज या एक दो रोज पहले नमाज़ पढ़ने वाले मुस्तहकीन को दे देना, मैंने उस पर अमल किया।

प्रिय पाठको! आप जानते हैं कि अल्लाह तआला ने फित्रा इस लिये वाजिब किया है कि ईद के रोज़ गरीब भी अच्छी तरह खा–पी कर ईद की खुशी मना सके, इस लिये हममें से जिस को अल्लाह तआला ने तौफीक़ से नवाजा है उसको चाहिये की ईद से दो एक रोज़ पहले ही से फित्रा अपने गरीब भाइयों को पहुँचा दें। फिर हमारे उलमा तो बताते हैं कि चाहे गेहूँ दो, चाहे उस की कीमत, नीज़ हमारे यहां एक आदमी की तरफ से जौ एक साअ दी जाएगी। लेकिन गेहूँ आधा साअ (1600 ग्राम)।

ईद के रोज़ अपनी उसअत के मुताबिक़ अच्छे कपड़े पहनना सुन्नत है, इसी तरह सुब्ह बहुत सवेरे उठ कर फज्र की नमाज़ अदा करना, ईद की नमाज़ से पहले ग़ुस्ल करना, मिस्वाक करना, ख़ुशबू लगाना, कुछ मीठा खा कर ईदगाह जाना, रास्ते में आहिस्ता–आहिस्ता यह तक्वीर पढ़ना सुन्नत है (अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द) अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह के सिवा

शेष पृष्ठ .....14 पर

जनायक

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी –अनु0 मुहम्मद गुफरान नदवी

हज़रत उमर का इस्लाम लाना–

हज़रत हमज़ा रज़ि0 के इस्लाम लाने से तीन दिन बाद हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 जो हुज़ूर सल्ल0 की मुख़ालिफ़त (विरोध) में दूसरे कुरैशियों से कम न थे, को इस्लाम की तौफ़ीक मिल गई। वह ज़ाती तौर पर बड़े बहादुर और दिलेर थे, और कुरैश की ओर से बाहरी देशों की सिफ़ारत (प्रतिनिधित्व) का काम भी उनके ज़िम्मे होता था। कुरैशी नौजवानों की एक बैठक में हुज़ूर सल्ल0 के ख़िलाफ़ तदंबीरें (उपाय) सोची जा रही थीं कि हज़रत उमर रज़ि0 लोगों की बात चीत और इस मंसअ़ले का हल निकालने के लिये विचार और चिन्तन से प्रभावित होकर कहने लगे कि रोज़–रोज़ के झनझट की ज़रूरत नहीं, क़िस्सा ही ख़त्म कर देता हूँ। और अपनी बहादुरी के भरोसे पर नबी सल्ल0 के क़त्ल का इरादा करके मज़लिस (बैठक) से निकले, बदन पर सब हथियार सजा रखे थे, रास्ते में एक मुसलमान हज़रत नईम बिन अब्दुल्लाह मिले और हज़रत उमर के दम ख़म देख कर बोले कि उमर! कहाँ का इरादा है? उमर बोलेः अरे यह मुहम्मद जिन्होंने एक मुसीबत खड़ी कर रखी है, उनको ख़त्म करने का इरादा है, हज़रत नईम पर असर पड़ा और वह उनका ज़ेहन मोड़ने के लिये बोलेः पहले अपनी बहन और बहनोई को भी देखो, वह दोनों भी मुसलमान हो चुके हैं, यह सुन कर हज़रत उमर बहन के घर गए, और बहन व बहनोई दोनों को ख़ूब मारा, यहाँ तक की बहन के जिस्म से ख़ून भी निकलने लगा, ख़ून को देख कर हज़रत उमर को कुछ लज्जा आई, क्योंकि अरब शुरफ़ा में औरत को इस तरह मारना ऐब समझा जाता था, बदनामी होती, उनकी बहन फ़ातिमा ने कहा कि कर लो जो चाहो। और जब यह देखा कि उमर को ख़ून देख कर, शर्मिन्दगी हुई तो कहाः उमर! तुम पहले वह किताब तो सुन लो जिसे सुन कर हम ईमान ले आए हैं, अगर वह तुमको अच्छी न लगे तो जो चाहे करना, उमर ने कहाः अच्छा। उस वक़्त उनके घर में एक सहाबी ख़ब्बाब बिन अरत रज़ि0 मौजूद थे जो हज़रत उमर के आ जाने से घर के अन्दरूनी कमरे में छुप गए थे वह निकल आए और उन्होंने कुर्आन मजीद (सूरह ताहा का पहला रुकू) सुनाया। कुर्आन सुनकर हज़रत उमर बोल उठेः यह पाकीज़ा और लाएक़े एहतिराम (सम्मान योग्य) कलाम है, मैं मुहम्मद से मिलना चाहता हूँ, वह कहाँ हैं? उनको बताया गया कि वह दारे अरक़म में हैं, वहाँ उमर गए, दरवाज़ा खटखटाया और अन्दर जाते ही नबी और कुर्आन पर ईमान ले आए[1]।

यह था दअ़वते हक़ का असर कि जो घर से क़ातिल बनकर निकला था, वह हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो जाने पर जाँनिसार बन गया, आगे चल कर उनका लक़ब (उपाधि) फ़ारूक़ हुआ। उन्होंने इस्लाम के लिये बड़े बहादुराना मअ़रके (संग्राम) अन्जाम दिये।

वहाँ से निकल कर, हज़रत उमर ने अपने मुसलमान होने का खुलकर एलान किया, यह बात कुरैश में फ़ौरन फैल गई, वह उमर

1. सीरत इब्ने हिशामः 1/291–292

1. सीरत इब्ने हिशामः 1/342–348

से भी लड़ने पर आमादा हो गए, लेकिन हज़रत उमर भी सख़्त बने रहे और मुख़ालिफीन और दुश्मनाने इस्लाम उनसे कुछ दबे, लेकिन जिन मुसलमानों पर बस चलता उनको ज़ियादा से ज़ियादा तंग करते और तकलीफ़ पहुँचाते रहे।

हब्शह की हिज़रत

जब रसूलुल्लाह सल्ल0 ने देखा कि आपके असहाब और साथियों को सख़्त आज़माईशों (परीक्षा) का सामना करना पड़ रहा है और आप उनकी हिफ़ाज़त और बचाव नहीं कर पा रहे हैं तो आप सल्ल0 ने उन से फ़रमाया, अगर तुम लोग हब्शह की तरफ़ निकल जाओ तो अच्छा है, वहां का जो बादशाह है, उसकी हुकूमत में कोई दूसरे पर जुल्म नहीं करता, वह एक अच्छा मुल्क है, यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिये नजात व कुशादगी (विशालता) का कोई सामान पैदा कर दे।

इस मौक़े पर मुसलमानों में से जो बहुत परेशान हो गए थे, उन्होंने हब्शह की तरफ़ हिजरत की, यह इस्लाम में पहली हिजरत थी, यह दस आदमी थे, उन्होंने अपना अमीर, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि0 को मुक़र्रर किया था, उसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि0 बिन अबी तालिब ने हिजरत की, फिर बहुत से मुसलमान एक के बाद एक वहाँ पहुँचे, उनमें कुछ तन्हा थे और कुछ अहलो अयाल के साथ थे। उन सब लागों की जिन्होंने हब्शह की तरफ़ हिजरत की, कुल तादाद 83 बताई गई है।[1]

कुरैश का तआकुब (पीछा करना)

कुफ़्फ़ारे कुरैश ने हब्शह हिजरत करने वाले मुसलमानों का समन्दर तक पीछा किया, मगर यह कश्तियों में बैठ कर रवाना हो चुके थे। कुरैश ने जब यह देखा कि मुसलमान वहाँ पहुँच गए, जहाँ उनको और आराम व सुकून मिल गया है तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ और अम्र बिन आस बिन वाएल को वहाँ भेजा, यह दोनों नुमाइन्दे बहुत से तोहफे और हदाया ले कर शाहे हब्शह नजाशी के पास गए और जा कर कहा कि इन लोगों को जो हमारे मुल्क से भाग कर आए हैं, हमारे सुपुर्द कर दिया जाए। लेकिन नजाशी ने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया और मुसलमानों को बुलाया और अपने पादरियों को जमा किया और मुसलमानों की तरफ़ बात करते हुए कहा, वह दीन क्या है जिसके लिए तुमने अपनी क़ौम को छोड़ दिया और उसको छोड़ने के बाद न मेरे दीन को कुबूल किया और न किसी और मशहूर दीन व मज़हब को इख़्तियार किया? उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल0 के चचा ज़ाद भाई जाफ़र रज़ि0 बिन अबी तालिब खड़े हुए और उन्होंने नजाशी से कहा: मैं इन लोगों से कुछ सवालात करना चाहता हूँ, आप उनसे जवाब तलब फ़रमाएं :–

1. क्या हम किसी के गुलाम हैं जो अपने आक़ाओं (मालिकों) से भाग कर आए हैं? अगर ऐसा है तो बेशक हम वापसी के लाएक़ हैं।

नजाशी ने अम्र बिन आस से मुख़ातब (सम्बोधित) हो कर कहा "क्या यह लोग किसी के गुलाम हैं?" अमर बिन आस ने कहा "गुलाम नहीं हैं बल्कि आज़ाद और शरीफ़ हैं"।

2. हज़रत जाफ़र ने नजाशी से कहा "आप उनसे यह भी मालूम करें कि क्या हम किसी का खून करके आए हैं?" अगर हम किसी का नाहक़ खून करके आए हैं तो

शेष पृष्ठ .....14 पर

1. सीरत इब्ने हिशाम: 1/321, अलकामिल फित तारीख़ 2/76, तब्क़ात इब्न सअद: 1/208

मदरसा

—हज़रत मौ० सै० अबुल हसन अली नदवी रह०

मदरसा वह कार्यशाला है जहाँ साधारण मनुष्यों को वास्तविक मानव बना कर उन्हें मानवता से सुसज्जित किया जाता है। जहाँ सत्य धर्म के आवाहक तथा इस्लाम के रक्षकों का उत्पादन होता है। मदरसा इस्लामी जगत का विद्युत केन्द्र है जहां से इस्लामी जनसंख्या अपितु मानवी जनसंख्या में आत्मिक विद्युत का वितरण होता है। मदरसा वह कार्य स्थल है जहाँ हृदय तथा दृष्टि का संशोधन होता है। मदरसा वह केन्द्र है जहाँ से पूरे संसार का संरक्षण होता है तथा समस्त मानव जीवन की देख रेख की जाती है। यहाँ का आदेश पूरे जगत पर लागू होता है, परन्तु संसार का आदेश मदरसे पर लागू नहीं होता। मदरसा किसी पंचांग, किसी काल, किसी संस्कृति, किसी सभ्यता, किसी भाषा, किसी साहित्य में सीमित नहीं है कि उस की पुरातन्ता अथवा पतन का भय हो। इस का सम्बन्ध सीधे मुहम्म
नुबूव्वत से है जो विश्वव्यापी और सदैव जीवित रहने वाला
भी है। इसका सम्बन्ध उस मानवता से है जो हर स
जीवन से है जो हर समय गतिशील तथा वेग

मदरसा वास्तव में प्राचीन तथा आधुनि
वह स्थान है जहाँ मुहम्मदी नुबूव्वत
विकास एवं गतिशीलता, दोनों पा

मोमिन औरत की शान

—मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0

औरत शोला भी है शबनम भी। अगर उसमें ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं, उसका दिल व निगाह बेबाक है, ईमान और यक़ीन की नेमत से वंचित है तो वो एक शोला की तरह है जिससे ज़िन्दगी व रूह के नशेमन को आग लग जाती है।

इसके विपरीत मोमिन और जिसका दिल व दिमाग़ ईमान के चिराग़ से रोशन होता है, ख़ुदा की मुहब्बत और उसके ख़ौफ़ से भरा रहता है और वो अपनी ज़िन्दगी को मूल्यवान समझती है तो वो उस शबनम की तरह है जिससे सारा बाग़ ठन्डक महसूस करता है, जिसकी [illegible] आमद पर पत्ता–पत्ता ख़िल [illegible] और डाली–डाली झूम [illegible] ज़मीन का हर [illegible] है।

[illegible]

की मन्ज़िल से गुज़रती हैं तो उसकी राह की हर परेशानी और मुसीबत को हंसती, खेलती बर्दाश्त करती हैं और किसी क्षण भी उनके क़दम में ग़लती और उनके ख़्याल में बदलाव नहीं पैदा होता। वो हज़रत सुमैया रज़ि0 की शक्ल में सामने आती है और ईमान व यक़ीन की मशअल जलाती है, मुसीबतों को दावत देती है और आख़िरकार अबूजहल का बरछा खाकर मौत की गोद में सो जाती है। मगर होटों तक कुफ़्र के कलिमे नहीं आ पाते, उसको अपना शौहर, अपनी औलाद, अपने अज़ीज़, अपनी दौलत छोड़ते हुए सआदत मालूम होती है कि ज़हे क़िस्मत कि ये चीज़ें ख़ुदा की मुहब्बत व ख़ौफ़ की राह में क़ुर्बान हो रही हैं। वो दीवाना होकर घर निकलती है और ये सुन कर कि हूजर सल्ल0 शहीद हो गये, बेचैन हो जाती है, [illegible]र हर एक से पूछती है, कोई [illegible] है कि तुम्हारा भाई क़ुर्बान [illegible] कोई सुनाता है कि [illegible]र ही शहीद हुआ, [illegible]र यक़ीन की [illegible] और रसूल [illegible]ने वाली

आगे बढ़ती जाती है और हुज़ूर सल्ल0 को पूछती जाती है, अचानक हुज़ूर सल्ल0 पर निगाह पड़ती है तो ज़बान से बेइख़्तियार निकलता है, (आप के होते हुए हर मुसीबत हल्की है) इसी वाक़्ये को मौलाना शिब्ली रह0 ने लिखा है जिसके दो आख़िरी शेर ये हैं।

मैं भी और बाप भी, शौहर भी
और बिरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुए
क्या चीज़ हैं हम।

वो लड़की हो या बड़ी, दिन की रौशनी में भी और रात के अंधेरे में भी ख़ुदा से डरती है, और ऐसे मौक़ों पर अपने बड़ों को भी सबक़ देती है। जब उसको उसकी माँ हुक्म देती है कि इससे पहले की रात की स्याही अपनी चादर लपेटे और सुबह आये दूध में पानी मिला दो। मुसलमान बेटी कहती है कि अम्मा! कल अमीरुल मुमेनीन ने मुनादी करवायी कि दूध में पानी कोई न मिलाये, माँ के कहने पर कि अमीरुल मोमीनीन इस समय कहां देख रहें हैं, बेटी ख़ुदा के ख़ौफ़ से लरज़ उठती है और जवाब देती है कि अम्मा!

अगर अमीरुल मुमेनीन की निगाह यहां नहीं पहुंच सकती तो क्या ख़ुदा भी नहीं देख रहा है? वो घर का काम भी करती है तो ख़ुदा को भूल कर नहीं। अल्लाह की रज़ा से बेनियाज़ होकर नहीं। वो क़दम–क़दम पर ख़ुदा को राज़ी करती है। उसकी निगाह इधर से उधर नहीं, उसके सामने ये आयत रहती है। (अनुवादः कि वो अपनी निगाहें नीचे रखे, और अपनी इज़्ज़त व आबरू की रक्षा करे और अपनी ज़ीनत की जगहों को ज़ाहिर न करे मगर जो खुली हुई रहती हैं और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें)।

वो किसी मजलिस में स्वतन्त्र रूप से सम्मिलित नहीं होती, न बेबाक निगाहें डालती फिरती है, इसको अपनी इज़्ज़त व आबरू हर चीज़ से अधिक प्यारी होती है, वो अगर अपने बाप से भी बात करेगी तो फ़ात्मा ज़हरा रज़ि0 के नक़्शे कदम पर चलकर, न उसका दिल गन्दी सोच से भरा होगा न दिमाग़ अश्लील ख़्यालों से, उसका लिबास सतर ढ़कने वाला होता है, न इतना बारीक होता है कि जिस्म झलके, न इस तरह खुला होता है कि जिस्म का कोई हिस्सा नज़र जाये। वो रसूलुल्लाह सल्ल0 की इस वईद से डरती है कि जो औरतें इस तरह का लिबास पहनती हैं कि पहनने के बाद भी नग्न लगतीं हैं और इतरारी चलती हैं, वो जन्नत में ना जाएंगी, न उनको जन्नत की खुशबू आयेगी, हालांकि जन्नत की खुशबू दूर से महसूस होगी। वो इबादत करती है तो ऐसी करती है कि बड़े–बड़े हिम्मत वाले हिम्मत छोड़ बैठें। हज़रत ज़ैनब रज़ि0 इस तरह की आख़िरी मिसाल थीं, वो अपने को मस्जिद के ख़म्बे से बांध कर लटका लेती थीं, ताकि नींद न आ जाए। उनसे हुजूर सल्ल0 को कहना पड़ा की संतुलन अपनाओ, बेहतर शक्ल वो है जो हमेशा किया जाए, चाहे थोड़ा हो। मुसलमान औरतें जाहिल रहना पसंद नहीं करतीं। वो अल्लाह की रज़ा के लिये, ख़िदमत के लिये, अधिकार व कर्तव्य की ख़ातिर इल्म को ज़रूरी क़रार देती हैं। वो समझती हैं कि बग़ैर इल्म के अमल अंधेरा होता है। जिहालत अपने लिये और दूसरों के लिये मुसीबत है और गुनाहों की जड़। वो आयशा रज़ि0 बनकर जिहालत के लिये रौशनी का मीनार साबित होती है। उसके सामने औरत तो औरत मर्द भी उसका सम्मान करते थे। और वो मसलों की दरिया बहाती है। वो इल्म के बग़ैर अमल को नाकारा जानती है। वो राबिया बसरिया रह0 की सूरत में प्रकट होती है और बड़े–बड़े इबादत गुज़ारों को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ जाती है। वो जब हुजूर सल्ल0 के इरशाद को सुनती हैं तो थर्रा उठती है कि तुम जहन्नम की ओर अधिक जाने वाली हो। एक औरत ने सवाल किया कि किस गुनाह के कारण से हम जहन्नम में अधिक जाने वाले हैं। आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि एक तो लान–तान करने की तुम्हारी आदत है, दूसरे शौहर की एहसान फ़रामोशी और नेमतों को इन्कार करना। तो वो अपनी ज़बान पर क़ाबू रखती है और वो अपने पति के घर को ही खुशी का गहवारा समझती है, और उसके घर वालों की निगरां बनती है। वो सैय्यदा फात्मा ज़हरा रज़ि0 को अपना नमूना बनाकर शौहर की ख़िदमत व इताअत करके ख़ातून–ए–जन्नत का ख़िताब पाती है। वो फ़रमाइश कम से कम और ख़िदमत व इताअत ज़्यादा से ज़्यादा करती है। वो शौहर के घर में शुक्र और एहसान मन्दी की ज़िन्दगी गुज़ारती है, और मेहनत व मशक़्क़त से जी नहीं चुराती। वो हसद और रश्क, ग़ीबत और चुगली और नाशुक्री से कोसों दूर रह कर

ज़िन्दगी गुज़ारती है। वो शौहर की ग़लतियों को नज़रअन्दाज़ नहीं करती बल्कि सभ्यता, अक़्ल और हुनरमन्दी से उसको ग़लत रास्ते से हटाती है। वो उम्मे हकीम रज़ि0 बनकर शौहर की इस्लाह व नजात के लिये कोसों सफ़र करती है और खुदा से बेज़ार शौहर को दिलासा देकर हुज़ूर सरकारे दो आलम सल्ल0 के पाक क़दमों पर ला गिराती है।

सब्र का दामन किसी भी समय नहीं छोड़ती है और जब उसका सबसे अज़ीज़ बेटा भी वफ़ात पाता है तो न चिल्लाती है न रोती है न शिकवा शिकायत करती है बल्कि शौहर को सब्र करने के लिए कहती है।

वो औलाद को आवारा नहीं छोड़ती है, उसकी शिक्षा–दीक्षा में मेहनत करती है, उसका प्यारा लड़का जब दीन की शिक्षा के लिए निकलता है तो उसको खुदा के हवाले करती है और नसीहत करती है कि बेटा झूठ न बोलना। उसकी शिक्षा व दीक्षा से शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0, ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती रह0 और बाबा फ़रीद गंज शकर जैसे बुज़ुर्ग बनते हैं। उसी की गोद में पले हुए ख़ालिद रज़ि0, अबू उबैदा रज़ि0 तारिक़ व क़ासिम जैसे शह सवार बनते हैं, वो अपनी औलाद को इस्लाम के रास्ते पर कुर्बान करते हुए ज़रा सा भी नहीं हिचकिचाती बल्कि उनको आमादा करके और कुर्बान करके खुदा का शुक्र अदा करती है। वो हज़रत ख़न्सा रज़ि0 बनकर अपने जवान चारो बेटों को बुलाकर और वास्ता देकर शहादत का शौक़ दिलाती है, और जब चारों शहीद हो जाते हैं तो वो शुक्र का सज्दा अदा करती है।

इसके अख़लाक़ व किरदार इतने वृहद, इतने मज़बूत और इतने श्रेष्ठ होते हैं कि अपने तो अपने, ग़ैर भी, दोस्त तो दोस्त दुश्मन भी, अपना सर झुका देते हैं। वो दिलों की दुनिया को रौशन और बाग़ों के सांचो को अपने अख़लाक़, हमदर्दी, ख़िदमत व सुलूक और मीठे बोल से बदल कर रख देती हैं।

ये है मोमिन औरतों की शान, क्योंकि वो ईमान और अमल की मशअल अपने हाथों में थाम कर खुदा का ख़ौफ़ अपनाती हैं, और अपनी ज़िन्दगी का मक़सद पहचानती हैं, और (दुनिया एक पूंजी है और उसकी बेहतरीन चीज़ नेक बख़्त औरत है) का मिस्दाक़ अपने को बनाती हैं। यही है वो मोमिन औरत जिसको खुदा तआला इस दुनिया में भी नवाज़ता है और आख़िरत में श्रेष्ठ बदल अता फ़रमायेगा।

मुबारक है वो औरत जो जलाकर ख़ाक कर देने वाले शोला बनने के बजाए, मुरझाये हुए पत्तों को ठन्डक पहुंचाने वाली शबनम बनना पसन्द करती है।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

बेटे की मौत पर आप सल्ल0 का इरशाद – हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 अपने बेटे हज़रत इब्राहीम रज़ि0 के पास आए, उनका आखिरी वक्त था। आप सल्ल0 के आँसू निकल पड़े। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि0 ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! आप भी रोते हैं? आप सल्ल0 ने कहा, ऐ इब्ने औफ! ये रहमत है। फिर आप सल्ल0 के आँसू निकल आएं और कहा, आँखें आँसू बहाती हैं और दिल ग़मगीन है लेकिन हम वही कहेंगे जिससे हमारा रब राज़ी हो, ऐ इब्राहीम! अल्बत्ता हम तुम्हारी जुदाई से ग़मगीन हैं। (बुख़ारी)

❑❑

इल्म की दो क़िस्में

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हमें जिस ज्ञान की आवश्यकता है उसके दो प्रकार हैं, एक वो जिसका सम्बन्ध आख़िरत से है, ये ज्ञान हमें बताता है कि इन्सान का अपने रब से क्या सम्बन्ध होना चाहिए, इसके कामों के आख़िरत में क्या परिणाम होगें, और दुनियावी ज़िन्दगी की जाएज़ आवयश्कताएं क्या हैं।

ये ज्ञान जिसका सम्बन्ध आख़िरत से है, अम्बिया और रसूलों के ज़रिये आता है, उनके जानशीन और फिर उनकी पैरवी करने वाले इस ज्ञान को दूसरे तक पहुँचाते हैं और उसको फैलाते हैं।

सबसे आख़िरी नबी और रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने इस क्रम में जो हिदायत दीं वो अन्तिम आदेश घोषित किये गये, जो बदले न जाने वाले हैं। इन आदेशों में न कमी की जा सकती है न अधिकता। केवल व्याख्या का काम जारी रहेगा।

दूसरे प्रकार का ज्ञान वो है जिसका सम्बन्ध दुनिया की आवश्यकताओं और मानवीय जीवन से है। ये ज्ञान मनुष्य की अक़्ल व अनुभवों की योग्यता व चिन्ता की ज्वलानगाह हैं। इस प्रकार के क्रम में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि "ये तुम्हारे दुनिया के कामों में से हैं"।

इस ज्ञान में मनुष्य अपनी चिन्ता व काम और अपने अनुभवों से वृहदता उत्पन्न करता रहता है, और नये–नये बदलाव होते रहते हैं, नये–नये आफ़ाक़ दरियाफ़्त होते रहते हैं। इस ज्ञान के द्वारा मनुष्य दुनिया की दिशा निश्चित करता है, इसमें छिपे हुए राज़ों को स्वीकार करता है, मानो रास्ता खुला है और मनुष्य इसी पर क़दम बढ़ा रहा है। इन्सान को अधिकार है कि इस ज्ञान से जिस हद तक चाहे लाभ प्राप्त करे और इससे मानवता की सेवा करे। लेकिन इस बात का ध्यान रखे कि इस्लाम और आख़िरत के ज्ञान से दूरी न पैदा होने पाये। इस्लाम स्वयं दुनियावी कामों में चिन्ता करने की दावत देता है, क़ुर्आन व हदीस दोनों में इस क्रम में मेहनत व कोशिश करने का हुक्म दिया गया है। इसलिये मुसलमानों ने अपने तरक़्क़ी के दौर में इसमें कोई कोताही नहीं की और इस ज्ञान की न केवल ये कि तहसील की बल्कि अपनी खोज और अनुभव से इस ज्ञान में असाधारण बढ़ोत्तरी की और इसके क्षेत्र को और बढ़ावा दिया।

मुसलमानों की सुस्ती और पश्चिम की चुस्ती– लेकिन फिर ऐसा दौर आया कि मुसलमान ऐश परस्ती में पड़ गए और अपने कर्तव्यों से पीछा छुड़ाने लगे, दूसरी और पश्चिम अपनी नींद से जागने लगा और मुसलमानों से प्राप्त ज्ञान से फ़ाएदा उठाने में लग गया। ज्ञान की प्राप्ति को उसने अपने जीवन का उद्देश्य बनाया, परिणाम स्वाभाविक था, प्रयास करने वाले को अपनी मेहनत का फल मिला, और ज्ञान व खोज की ज़िन्दगी के मैदान में उसने पूरी इन्सानी नस्ल को प्रभावित किया और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए नये–नये साधन उपलब्ध हुए।

दीन की पाबन्दी के साथ ये भौतिकवादी उन्नति मुसलमानों के लिये मना नहीं और इससे बचना मुसलमानों के लिए लाभदायक भी नहीं, उनके दीन व धर्म ने उन्हें इस मैदान में प्रयास करने का आदेश भी दिया, अल्लाह तआला फ़रमाता है :

(अनुवादः और जहां तक हो सके उनके मुक़ाबले के लिये तैयारी करो जितनी ताक़त तुम से बन सके और घोड़ों का जितना नज़्म होगा उससे तुम अल्लाह के दुश्मन और अपने दुश्मन को डरा सकते हो)।

हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया तुम भी अपने दुश्मनों जैसे अस्लहे से लैस रहो। अल्लाह तआला ने इस दुनिया में सही तरीके से फ़ाएदा उठाने का आदेश भी दिया, फ़रमाता हैः

(अनुवादः पूछ तू कि जो पसन्दीदा और भली लगने वाली और रिज़्क की पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए पैदा की उनको हराम किसने किया)।

ज़रूरत और हालात की माँग–

ये सभी चीजें हमसे मांग कर रहीं हैं कि हम अपने दुनियावी कामों में इस नई रफ़्तार से भरपूर फ़ाएदा उठाएं, अपनी सभ्यता को और उन्नति प्रदान करें। ख़ुदा ने दुनिया की अच्छी चीज़ों से फ़ाएदा उठाने की इजाज़त दी है, शर्त केवल ये है कि इससे लाभ प्राप्त करने के लिए जो हद निश्चित कर दी गयी हैं उनको पार न किया जाये।

❑❑

जगनायक.....

आप हमको बिला किसी संकोच के मक़तूल (बाधित) के अभिभावकों के हवाले कर दीजिए।

नजाशी ने अम्र बिन आस से मुख़ातब (सम्बोधित) हो कर कहा "क्या यह लोग कोई नाहक़ खून करके आए हैं?" अम्र बिन आस ने कहा "खून का एक कतरा भी नहीं"।

3. हज़रत जाफ़र ने नजाशी से कहा "आप उनसे यह भी मालूम करें कि क्या हम किसी का माल लेकर भागे हैं? अगर किसी का माल लेकर आए हैं तो हम उसको अदा करने के लिये तैयार हैं।

नजाशी ने अम्र बिन आस से मुखातब हो कर कहा "अगर यह लोग किसी का माल ले कर आए हैं तो मैं इसका कफ़ील (उत्तरदायी) और ज़ामिन और उसके तावान का ज़िम्मेदार हूँ।"

अम्र बिन आस ने कहा "यह लोग तो किसी का एक क़ीरात अर्थात एक पैसा भी लेकर नहीं आए।

नजाशी ने कुरैश के वफ़्द से मुख़ातब हो कर कहा "फिर किस चीज़ का मुतालिबा है?"

अम्र बिन आस ने कहा "हम और ये एक दीन पर थे, हम उसी दीन पर क़ाएम रहे और इन लोगों ने उसको छोड़ दिया और एक नया दीन इख़्तियार कर लिया।

नजाशी ने सहाबा से मुख़ातब हो कर कहा "जिस दीन को तुमने छोड़ा है और जिस दीन को तुमने इख़्तियार किया है वह क्या दीन है?"

हज़रत जाफ़र रज़ि0 ने दोनों दीन की वज़ाहत (स्पष्टी करण) करते हुए समझा दिया।

जारी.....

❖❖❖

ईद मुबारक.....

कोई माबूद नहीं, अल्लाह बड़ा और सभी तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं।

ईद के रोज़ मुख्तलिफ किस्मों से खुशी मनाना दुरुस्त है, जैसे अच्छे अशआर पढ़ना, खेल–कूद करना, खाना–पीना, लोगों को खिलाना वगैरह। लेकिन नाच, बाजा, टीवी के गन्दे प्रोग्राम वगैरह से दिलचस्पी लेना नाजाइज़ है, इन गुनाहों से पूरी तरह बचना चाहिये।

❖❖❖

(देवनागरी लिपि में उर्दू)

वदाईया

—इदारा

दारुल उलूम नदवा के फारिग होने वाले तलबा के नाम

अलवदाउ अलवदाउ अलवदाअ़
अलवदाअ़ ऐ दिल के पारो अलवदाअ़
यह अहम क़ानून है सबके लिए
एक दिन आमद तो एक दिन अलवदाअ़
हो मुबारक आपको यह इल्मे दीं
दीन फैलाओ जहाँ में अलवदाअ़
ख़ुल्क़ से अपने दिलों को जीतना
देना पैगामे महब्बत अलवदाअ़
और पयाम इन्सानियत का आम हो
यह पयाम हर इक को देना अलवदाअ़
भूल जाना सख़्तियों को यां की तुम
ज़िन्दगी तुम सहल पाओ अलवदाअ़
बाप माँ से करना तुम अच्छा सुलूक़
भाई बहनों से महब्बत, अलवदाअ़

अज़दिवाजी ज़िन्दगी है लाज़िमी
होना तुम शौहर मिसाली अलवदाअ़
अब्बा ने तुम को पढ़ाया जिस तरह
बेटों को तुम भी पढ़ाना अलवदाअ़
बेटियों को दिल में देना तुम जगह
इल्मे दीं उन को पढ़ाना अलवदाअ़
बे नमाज़ी से कहो रब से डरो
फ़र्ज़ हैं तुम पर नमाज़ें अलवदाअ़
अब नमाज़ों का करो तुम एहतिमाम
ता खुदा राज़ी हो तुम से अलवदाअ़
बिदअतों में मुब्तला से यह कहो
बिदअ़तों से कह दो अब तुम अलवदाअ़
कह दो उन से जो नबी ने है कहा
यानी बिदअ़त है ज़लालत अलवदाअ़

शिर्क को बख़्शेगा हरगिज़ ना खुदा
मुश्रिकों से साफ़ कह दो अलवदाअ़
क़ादियानी जो मिले उससे कहो
लाओ तुम ईमान वरना अलवदाअ़
बात हक़, हिकमत से पहले तुम कहो
जो न माने उससे कह दो अलवदाअ़
बरसहा तलबा की खिदमत मैंने की
और हूँ अब सच्चा राही अलवदाअ़
सच्चा राही चाहता है रहनुमा
राह तुम उसको दिखाओ अलवदाअ़
कम नज़र जो हो गई कुछ ग़म नहीं
मसलहत इस में है बेशक, अलवदाअ़
ख़ुल्क़ को अपना बनाना तुम शिआर
जाओ मेरे दिल के पारो अलवदाअ़

❖❖❖

एक शिक्षार्थी की डायरी से

—ए0जे0 खान

यह 1949—50 ई0 की बात है। जब मैं राजकीय इण्टर कालेज रायबरेली का कक्षा 9 विज्ञान वर्ग का छात्र था। उस समय रा0इ0का0 पढाई और अनुशासन के मामले में शहर के स्कूलों में टॉप पर था। श्री झाबू लाल शर्मा उस समय के प्रधानाचार्य थे। सरल स्वभाव के होते हुए भी विद्यालय का अनुशासन और नियंत्रण अच्छा था। स्कूल के अधिकतर शिक्षक योग्य, अनुभवी और अपने—अपने विषयों के जानकार थे। सभी शिक्षक अपने विषय मेहनत और लगन से पढ़ाते थे। चूँकि उस समय ट्यूशन की परम्परा नहीं थी, इसीलिए सभी अध्यापक निःस्वार्थ भावना से शिक्षण कार्य करते थे। हम सभी छात्र स्कूल की ही पढ़ाई पर निर्भर रहते थे। इसी पढ़ाई के बल पर यहाँ के छात्र बोर्ड परीक्षाओं में उच्च स्थान प्राप्त करते थे। उस समय के टीचर्स में से मैं यहां पर ऐसे टीचर्स का जिक्र कर रहा हूँ, जो अपने आप में विशिष्ट थे। उनमें श्री इन्द्र देव शर्मा, मौलवी अतहर अली, श्री औलाद हुसैन रिज़वी के नाम विशेष रूप से लिये जा सकते हैं।

श्री इन्द्र देव शर्मा विज्ञान के अध्यापक थे। अनेकों खूबियों के मालिक थे। 28—30 वर्ष के एक खूबरु इन्सान थे, छरेरा बदन, मुनासिब कद, साफ़ रंग, अच्छा नाक नक्शा, देखने में बहुत हसीन व जमील थे। पूरे स्टाफ में उन का रख—रखाव और पहनावा सबसे अच्छा था। मंहगे और हल्के रंग के कपड़े पहनते थे। प्रतिदिन नई पोशाक में आते थे। जूते पालिश किये हुए रहते। खूबसूरत के साथ—साथ खूबसीरत भी थे। छात्रों के साथ अच्छा बरताव करते थे। अनुशासन प्रिय थे। इन सभी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ साथ वह शिक्षण कार्य में भी कुशल थे। वह अपने विषय के जानकार और विद्वान थे, बड़ी लगन और परिश्रम से शिक्षण कार्य करते थे। पढ़ाने का तरीका अति उत्तम, हर बात को अच्छी तरह समझाते, अच्छी तरह Explain करते। सिलसिलेवार पढ़ाते, घण्टा बजते ही क्लास में पहुँच जाते, एक मिनट भी ज़ाया न करते। पढ़ाते समय सभी बच्चे शान्त रहते, Pin drop relince रहती, एकाग्रचित हो कर केवल उनकी बात सुनने की ताकीद थी। पूरे समय खड़े होकर पढ़ाते, समय—समय पर श्याम पट, सहायक सामग्री तथा अन्य अप्रेटस का भी प्रयोग करते। पढ़ाने के दौरान प्रश्न करने की इज़ाज़त नही थी। बाद में छात्र अपनी जिज्ञासा और समस्याओं का समाधान करते। शर्मा जी अपने विषय के विद्वान अवश्य थे मगर जैसा कि कहावत मशहूर है कि "ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पन्डित होय" के अनुसार पूर्ण पन्डित बनने के लिए इन्हें भी ढाई अक्षर प्रेम का पाठ पढ़ना पढ़ा। शर्मा जी जहाँ रहते थे वहीं की एक ठाकुर परिवार की लड़की के प्रेम जाल में फंस गये। जब शिकार स्वयं चल कर शिकारी के पास पहुँच जाये तो बेचारे शिकारी का क्या कुसूर। कभी—कभी शिकारी भी खुद शिकार हो जाता है। ऐसा ही शर्मा जी के साथ हुआ। मगर यह बात लड़की के परिवार वालों को बहुत नागवार गुज़री। वे क्रोधित हो उठे और शर्मा जी के जानी दुश्मन हो गये। उनके विरुद्ध ऐसा षडयंत्र रचा कि उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। उनकी अप्राकृतिक मौत से हम लोग बहुत

दुखी हुए, क्योंकि वह एक विद्वान अध्यापक के साथ–साथ एक अच्छे इन्सान भी थे।

मौलवी अतहर अली उर्दू के अध्यापक थे। सीधे–साधे इन्सान थे। दुनिया के छल–कपट से उनको कोई सरोकार नहीं था। सफेद पाजामा, काली शेरवानी और सर पर दो पल्ली टोपी का प्रयोग करते थे। लेकिन कपड़े की सफाई पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते थे। विषय विशेष की जानकारी कम होने के कारण छात्र उन्हें बहुत तंग करते थे। उनके क्लास में बहुत शोर होता था, जिससे अन्य कक्षाओं की पढ़ाई भी बाधित होती थी। यही कारण था कि प्रिन्सपल साहब ने उनका क्लास मुख्य भवन से दूर अलग कार्नर पर एलाट कर रखा था। बच्चों ने उनका नाम मौलवी हुडुक रख रखा था। वह स्कूल और स्कूल के बाहर भी इसी 'मौलवी हुडुक' के नाम से जाने जाते थे। विषय की जानकारी कम होने के कारण वह पढ़ाने में भी कमज़ोर थे। इसीलिए उनके क्लास में अनुशासन की समस्या सदैव बनी रहती। जब मौलवी साहब बच्चों को अश्आर का अर्थ बताते तो कोई न कोई छात्र बीच में ही उन्हें टोक देता कि इस शेर का अर्थ यह नहीं, यह है। मौलवी साहब ऊँची आवाज़ में बिगड़ कर कहते "बको मत, मैं जो कह रहा हूँ वही ठीक है"। इस तरह "बको मत" उनका तकिया कलाम बन गया था। जब बहुत परेशान हो जाते तो छात्रों को डराने के लिए कहते "I will report you" और यह कह कर प्रधानाचार्य के कमरे की ओर चल पड़ते, कुछ शरारती छात्र भी छुपते हुए उनका पीछा करते कि वह प्रधानाचार्य के कमरे तक जाते भी हैं कि नहीं। स्वभाव को देखते हुए, प्रधानाचार्य से रिपोर्ट करना उन के बस की बात नहीं थी। वह सदैव प्रधानाचार्य के कमरे तक जा कर वापस आ जाते। पीछा करने वाले छात्र उनसे पहले आकर खुशखबरी देते कि मौलवी साहब ने रिपोर्ट नहीं की है। बाद में मौलवी साहब बड़े रोअब से बताते कि मैंने रिपोर्ट कर दी है। छात्रों पर दबदबा बनाने के लिए मौलवी साहब ने अंग्रेज़ी के कुछ वाक्यांश याद कर लिये थे, जब क्लास में छात्र उनके सम्मान में खड़े होते तो वह कहते "Please sit down" फिर वह अंग्रेज़ी में आदेश देते "Open you book, put on the desk" और बीच–बीच में क्रोधित होने पर "I will report you" की धमकी भी देते रहते।

बेचारे इतने सीधे कि अपना वेतन कभी नहीं गिन पाते। उन्हें यह भी नहीं याद रहता कि उनका वेतन कितना है? जितना मिलता जेब में रख लेते और घर पहुँच कर पत्नी के सुपुर्द कर देते। कम होने पर पत्नी की डांट भी खानी पड़ती थी। बीच–बीच में उनकी पत्नी कार्यालय आकर उनके वेतन और अन्य देयों की जानकारी करती रहती थीं। मौलवी साहब की एक कमज़ोरी और भी थी, वह अक्सर शेरवानी बिना कमीज़ के भी पहन लेते थे। इस कारण उन्हें एक बार स्टाफ के सामने बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी। स्कूल में स्टाफ और छात्रों के बीच क्रिकेट मैच चल रहा था। साथियों ने मौलवी साहब से भी खेलने के लिये आग्रह किया, मगर वह बराबर इन्कार करते रहे, फिर कुछ साथियों ने बढ़ कर उनकी शेरवानी के बटन खोल दिये तो वास्तविकता का एहसास हुआ कि मौलवी साहब खेलने से क्यों कतरा रहे थे? साथियों को बड़ा पश्चाताप हुआ और मौलवी साहब को शर्मिन्दगी। इस घटना से मौलवी साहब ने सबक लिया और शेरवानी के नीचे कमीज़ पहनने लगे। मौलवी

शेष पृष्ठ .....19 पर

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्नः आज कल नव जवानों में बिना टोपी के नमाज़ पढ़ने का रुझान बढ़ता जा रहा है, सवाल यह है कि बिना टोपी के नमाज़ पढ़ना कैसा है?

उत्तरः रसूलुल्लाह सल्ल0 का आम मामूल सर ढक कर नमाज़ पढ़ने का था, अल्लामा इब्नि कय्यिम रह0 ने लिखा है कि आप सल्ल0 का "मवाब" नामी अमामा था, आप सल्ल0 उसे कभी टोपी के ऊपर पहनते और कभी सिर्फ टोपी पहनते, अमामा नहीं। (जादु मआद 135/1) इसलिए फुकहा ने लिखा है कि टोपी या अमामा मौजूद हो उसके बावजूद सिर्फ सुस्ती और काहिली की वजह से बिना टोपी या अमामा के नमाज़ पढ़ी जाए तो यह मकरूह है। (फतावा हिन्दिया 106/1)

मशहूर आलिमे दीन मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी लिखते हैं कि सहीह मसनून नमाज़ का तरीका वही है जो आँ हुजूर सल्ल0 से साबित है यानी बदन पर कपड़े और सर ढका हुआ हो, पगड़ी से या टोपी से। (फतावा सनाइया 525/1) अलबत्ता टोपी या अमामा किसी के पास न हो तो उसकी वजह से नमाज़ न छोड़े बल्कि बिना टोपी के नमाज़ अदा करले। इससे भी नमाज़ हो जाएगी लेकिन इसको मामूल बनाना कराहत से खाली नहीं।

प्रश्नः मस्जिद में ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोग शर्ट इन करके नमाज़ पढ़ते हैं क्या इस तरह नमाज़ अदा करना दुरुस्त है?

उत्तरः शर्ट इन की वजह से कमर के नीचे के हिस्से में आजा (अंगों) की बनावट नुमायाँ (स्पष्ट) हो जाती है और बेपर्दगी होती है, हालांकि नमाज़ की हालत में सत्र और पर्दे का खास तौर से हुक्म है, इस लिये हालते नमाज़ में इस तरह की बेपर्दगी ना मुनासिब है, इससे बचना चाहिए, अलबत्ता नमाज़ अदा हो जाएगी।

(दुर्रुल मुख्तार 91/1)

प्रश्नः पैंट या पैजामा टख्नों से नीचे लटकता हो तो नमाज़ दुरुस्त होगी या नहीं?

उत्तरः टख्ने से नीचे लटकता हुआ कपड़ा पहनना आम हालात में भी मना है, हदीस में आता है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया कि तीन शख्स वह हैं कि अल्लाह तआला कियामत के दिन उनसे बात नहीं करेंगे और न उनकी तरफ रहमत की निगाह फरमाएंगे और न ही उनको गुनाहों से पाक करेंगे और उनके लिए सख्त अज़ाब होगा उन तीनों में पहला शख्स वह होगा जो अपने कपड़े टख्नों के नीचे लटका रखे (सुनन अबू दाऊद हदीस 4088) इस तरह की हदीसों को सामने रखते हुए फुकहा ने लिखा है कि पायजामा या पैंट वगैरह टख्नों से नीचे रखना मना है, और मकरूह तहरीमी है। और नमाज़ की हालत में जो एक अहम इबादत है, में ऐसा करना मज़ीद कराहत और गुनाह है, अलबत्ता नमाज़ हो जाएगी।

प्रश्नः हाफ शर्ट में नमाज़ अदा करना कैसा है? इसी तरह अगर फुल शर्ट हो लेकिन आस्तीन नमाज़ की हालत में कुहनियों से ऊपर उठा लेना कैसा है?

उत्तरः आस्तीन को कुहनियों तक उठा कर नमाज़ पढ़ना मकरूह और अदब के खिलाफ है, फुक़हा ने सराहत के साथ लिखा है कि

ऐसा करना मकरूह है। लेकिन जो लोग हाफ शर्ट पहनने के आदी हैं और हर जगह उनका वही लिबास है तो उनके लिये हाफ शर्ट इस्तेमाल करने की हालत में भी नमाज़ अदा करने की गुंजाइश है।

प्रश्नः कुछ लोगों के लिए स्कूल या आफिस में टाई लगाना जरूरी होता है और ड्यूटी के दौरान नमाज़ का वक्त आ जाता है, क्या ऐसे लोग टाई पहने हुए नमाज़ पढ़ सकते हैं?

उत्तरः मौजूदा दौर में टाई का इस्तेमाल उमूमी तौर पर होने लगा है, और ज़ाहिर में किसी अकीदे और दीनी नजरिया की बिना पर लोग इस्तेमाल नहीं करते हैं, इसलिए अगर नमाज़ की हालत में टाई लगी हो तो उसमें कोई हरज नहीं, नमाज़ अदा हो जाएगी।

प्रश्नः सेन्ट लगे कपड़ों में नमाज़ दुरुस्त होगी या नही? कुछ लोगों का ख्याल है कि इसमें अलकोहल है जो नजिस है, इसलिए नमाज़ नहीं होती है, सहीह क्या है? मुत्तला करें।

उत्तरः सेन्ट के बारे में माहिरीने कीमिया की राय यह है कि इस में जो अलकोहल इस्तेमाल होता है उसमें नशा नहीं होता है और यह उससे मुखतलिफ होता है जो शराब और दवाओं में इस्तेमाल किया जाता है, इसलिए यह नापाक नहीं है, लिहाजा इसके नापाक न होने की वजह से कपड़ा भी नापाक न होगा और उसके लगे होने से नमाज़ दुरुस्त होगी।

❖❖❖

एक शिक्षार्थी की .....

साहब शहर में किराये के मकान में रहते थे। उनका आबाई मकान शहर से दस किलो मीटर दूर देहात में था। जब कभी वह देहात अपने घर जाते तो रास्ता भूल कर बहुत आगे निकल जाते, तो कोई न कोई खुदा का बन्दा उन्हें टोकता कि मौलवी साहब कहां जा रहे हैं? आपका मकान तो बहुत पीछे छूट गया है। वर्तमान में ऐसे सीधे लोग कहां मिलते हैं? अफसोस कि मौलवी साहब हम लोगों के बीच नही हैं।

श्री औलाद हुसेन रिज़वी लैंग्वेज के टीचर थे। विशेषकर अंग्रेज़ी ग्रामर पढ़ाने में माहिर थे। बहुत ही हंसमुख, पुरमज़ाक और ज़िन्दा दिल इन्सान थे। उस्ताद–शिष्य के बन्दिशों से अलग हट कर दोस्ताना लहज़ा इख़्तियार कर लेते। पढ़ाने के साथ–साथ वह छात्रों को खुश रखने के लिए पढ़ाई के दौरान छोट–मोटे चुटकुले भी सुनाते रहते थे। खुद भी हंसते थे और दूसरों को भी हंसाते थे। वह कभी–कभी लोगों से मज़ाक भी करते, मगर यह ध्यान रहता कि अनुशासन की सीमा क्रास न करने पाये। छात्र उन्हें पूरा सम्मान देते थे और उनसे अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करने का प्रयत्न करते थे। यह उन्हीं की विशेषता थी कि अंग्रेज़ी ग्रामर जैसे कठिन विषय को सरल और रोचक ढंग से पेश करते थे। इसी लिए पूरे शहर में अंग्रेज़ी ग्रामर पढ़ाने के लिए मशहूर थे। दूसरे स्कूलों के छात्र भी उनसे ग्रामर पढ़ने के लिए लालायित रहते थे। विषय को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करने का आर्ट उन्हीं में था। मैंने रिज़वी साहब से बहुत कुछ सीखा है। विशेषकर अंग्रेज़ी का सरमाया उन्हीं की देन है। अफ़सोस कि बीमारी ने उन्हें वक्त से पहले ही हम लोगों से छीन लिया। उनके हलक–फुलके चुटकुले और मज़ाक उन्हीं के साथ चले गये।

❑❑

अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी अनु०—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

संगत का उदाहरण

आप सल्ल० ने उसको मिसाल से समझाया कि अच्छी संगत की मिसाल इत्र बेचने वाले की है, यदि उसके पास बैठोगे तो खुशबू से फायदा उठाओगे और उसकी खुशबू से तुम भी महकने लगोगे। मज़ा आ जाएगा। अगर न ख़रीदो तब भी खुशबू लेकर जाओगे। यदि भट्टी फूंकने वालों के पास बैठोगे तो उसका धुवाँ और उसकी कालिख मिलेगी। कालिख से यदि तुमने अपने को बचा भी लिया तो भी धुवाँ तो कहीं गया नही! जैसा कि मैंने कहा कि या तो बुरे बन जायोगे या बुरी शोहरत वाले हो जाओगे। इसीलिए कहा गया कि बुरों की संगत से बचते रहो। ये बड़ी महत्वपूर्ण बात है। हमारे हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अल्लाह उनको लम्बी उम्र दे) के पास एक सज्जन आए जो बड़े नेक नाम अर्थात भले आदमी थे। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति, जो बदनाम है, मुझे बुला रहा है, सोचता हूँ कि चला जाऊँ, हो सकता है कि असर कुबूल कर ले। हज़रत मौलाना राबे साहब ने बहुत पते की बात कही, कहा कि यदि उनके पास जाओगे तो उनकी बुरी शोहरत आपको मिल जाएगी और आपकी अच्छी शोहरत उन्हें मिल जाएगी, इसलिए बुरे लोगों से बचना चाहिए। हाँ! जो अल्लाह के नेक बन्दे हैं, जिनको अल्लाह ने नवाजा है उनके साथ रहो। मैंने बताया था कि हज़रत शाह इस्माईल शहीद रह० वहां गए तो उनकी संगत में नहीं गए थे, उनसे मुआमला करने नहीं गए थे बल्कि उनके सुधार हेतु गए थे। उस नीयत से गए और वहां से लौट आए। लेकिन अगर कोई मुआमला कर रहा है और उसके पास उठ—बैठ रहा है तो तुम्हारी शोहरत उसको मिल जाएगी और उसका थोड़ा हिस्सा तुम्हें मिल जाएगा। तो उसका फायदा होगा, और तुम्हारा नुकसान होगा। इसलिये आदमी को एहतियात करनी चाहिए।

• बुरी संगत का प्रभाव पड़ कर रहता है। देखिये! आपने एक बीज डाल दिया। बीज पड़ गया तो ये ज़रूरी नहीं हैं कि तुरन्त पेड़ उग आए। बीज पड़ गया तो अब धीरे—धीरे काम होता रहेगा। अल्लाह वालों की संगत का भी यही फायदा होता है कि बीज पड़ जाता है और काम धीर—धीरे होता रहता है। लेकिन ये, काम तभी सक्सेज होगा जब आदाब की रिआयत होगी। और वह व्यक्ति योग्य भी हो जिसकी सेवा में आप जा रहे हैं, तो बीज पड़ जाएगा और कुछ दिनों, बरसों के बाद एक दम रंग बदलेगा। मालूम हुआ कि जो थोड़ी देर उनकी संगत में रहे थे, उसका प्रभाव पड़ा। बहुत इधर—उधर हुए मगर जो थोड़ी देर उनकी संगत में रहे तो उसका प्रभाव पड़ा। बहुत इधर—उधर भागते रहे अंत में फिर लौट कर आ गए। अल्लाह वालों की संगत का प्रभाव पड़ता ही है।

हज़रत मौलाना अली मियाँ रह० के साथ भी कितनी ऐसी घटनाएं घटी हैं कि हज़रत मौलाना रह० के साथ कुछ दिन रहे और उनकी संगत में बैठे। फिर बैठना छोड़ दिया और इधर—उधर टहलते रहे। अंत में फिर पलट कर वही रंग चढ़ा और फिर वहीं आ गये, जहाँ से चले थे। ये अल्लाह वालों की संगत का प्रभाव है।

इसलिए अरबी का एक शेर है:

अनुवाद: "मैं नेक लोगों से मुहब्बत करता हूँ, चाहे मैं उन जैसा न हूँ, हो सकता है कि उसकी बरकत से अल्लाह हमको भी नेकी अता कर दे"।

तो अल्लाह वालों से मुहब्बत करनी ही चाहिये और असल तो ये है कि उनकी संगत में बैठें। यदि संगत में नहीं बैठ सकता तो उनकी पुस्तकों का अध्ययन करे। उनकी जीवनी पढ़े। उसके भी प्रभाव पड़ते हैं। नही तो संगत का कोई बदल नही है। जिस तरह बिना सोहबत के नस्ल नहीं चलती केवल हज़रत आदम अ0 और ईसा अ0 के।

वैसे ही बिना संगत के ये निस्बत हासिल नहीं होती मगर ये कि अल्लाह किसी को अपनी तरफ से नवाज़ दे। और ये कभी–कभी होता है। इस पर सबको क़यास नहीं किया जा सकता है। अल्लाह की सुन्नत और उसका तरीक़ा यही है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की संगत में रहे तो सहाबा बन गए। ताबेओन की संगत में रहे तो तबा ताबेओन बन गए। वह सिलसिला अभी जारी है। जैसे हज़रत आदम अ0 से वंशावली चल रहा है इसी प्रकार धार्मिक ज्ञान का क्रम चल रहा है। अल्लामा इब्ने सीरीन रह0 ने लिखा है कि दीन का इल्म उससे सीखो जो दीनदार हो। इसलिये कि ये दीन का इल्म है, बेदीन से न सीखो। सोच लो दीन किससे ले रहे हो, क्योंकि जब उसकी संगत में आओगे तो उसके प्रभाव पड़ेंगे। वह दीन–धर्म की की बातें तो करता है लेकिन खुद उसके खिलाफ है। ये क़यामत की अलामत में से है।

जब अयोग्य को कार्य सौंपा जाए तो प्रलय की प्रतीक्षा करो कि वह योग्य नही है और उसको कार्य सौंप दिया गया। हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 ने एक जगह लिखा है कि हदीस पढ़ाने की योग्यता वही रखता है जो सुन्नत पर अमल करता है। केवल लच्छेदार भाषण देने वाला हदीस पढ़ाने के योग्य नहीं है। जो सुन्नत पर अमल करता है वही योग्य है। बहरहाल संगत का असर कहीं जाता नही है। इसीलिए आप सल्ल0 ने कहा कि व्यक्ति अपन मित्र के धर्म पर होता है, उसको सोच लेना चाहिए कि उसने किससे दोस्ती की है। क्योंकि प्रभाव पड़ते हैं और आप सल्ल0 ने बहुत सी हदीसों में ये बात बयान की है कि आपस में मुहब्बत करने वालों के लिये मेरी मुहब्बत है। उनको जन्नत में ऊँचा मुक़ाम मिलेगा और वह अर्श के साये में रहेंगे। उससे सम्बन्धित एक घटना भी घटी कि एक बुजुर्ग हैं अबू इद्रीस खौलानी रह0 जो एक बार दमिश्क़ की मस्जिद में गए तो देखा कि एक बड़ा ही खूबसूरत नौजवान जिसका चेहरा चमकता हुआ है, बैठ क़र दर्स (शिक्षा) दे रहा है। लोग एक दूसरे के विचारों की विभिन्नता में उनसे सम्पर्क कर रहे हैं। वह बड़े प्रभावित हुए और कहने लगे कि मैं उनसे अलग मिलूँगा। दूसरे दिन वह तड़के ही पहुँच गए ताकि अकेले में मुलाक़ात हो जाए। देखा तो वह महोदय पहले ही आ चुके थे और नमाज़ पढ़ रहे थे। उन्होंने सलाम फेरा तो वह सामने आए और कहा कि हज़रत! मुझे आपसे मुहब्बत है, तो उन्होंने कहा क्या सचमुच तुम अल्लाह के लिये कह रहे हो? खौलानी रह0 ने कहा हक़ीकत में मुझे आप से अल्लाह के लिये मुहब्बत है। दो–तीन बार उन्होंने पूछा और फिर मेरी चादर का कोना खींचा और कहा कि मैं खुशख़बरी सुनाता हूँ कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को कहते हुए सुना है कि मेरी मुहब्बत वाजिब हो गई आपस में प्रेम करने वालों

के लिए, आपस में एक साथ बैठने वालों के लिये, एक दूसरे के दर्शन करने वालों के लिये, और एक दूसरे पर खर्च करने वालों के लिये। ये हैं हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 जो हलाल व हराम के सबसे ज्यादा जानने वाले, और अल्लाह ने उन्हें हुस्न व खूबसूरती से भी नवाज़ा था। जब बैठ कर पढ़ाते थे तो लोग देखा करते थे। एक हदीस में है कि यदि किसी को किसी से प्रेम हो तो उसको बता भी दे, बताने में प्रेम में बढ़ोत्तरी हो जाती है। मुहब्बत भी अजीब चीज़ है, उसके प्रभाव पड़ कर रहते हैं। यहाँ तक चेहरे में भी समानता आ जाती है। जब आदमी को किसी अल्लाह वाले से ज़ियादा मुहब्बत हो जाती है तो अंत में उसके चेहरे पर असर पड़ने लगता है। मुहब्बत करते–करते, साथ रहते–रहते कई बार लोग धोखा खा जाते हैं कि वही आ रहा है। जब दोतरफा मुहब्बत होती है तो ये चीज़ पैदा हो जाती है।

ईमान वालों की संगत का लाभ

आप सल्ल0 ने ये भी कहा कि संगत में रहो तो मोमिन ही की तरह रहो। जो लोग मोमिन नहीं और गुनाहों, बेहयाइयों में डूबे रहते हैं उनकी संगत से जहाँ तक हो सके बचना चाहिए। जैसे कि अधिकतर होता है कि लोग कार्यालय में काम करते हैं, काफिरों और बहुदेववादियों के बीच रहते हैं, गुनाहों और नाफरमानियों के अड्डे पर रहते हैं। हालांकि जो भले लोग होते हैं उनका जी चाहता है कि वहाँ से भाग खड़े हों, ये नहीं कि उनका मन लगता है। बस बेचारे मजबूरी में चले आए। आ गए हैं साफ–सुधरी जीविका के लिये। अब यहाँ से भागना है और किसी अल्लाह वाले कि संगत में बैठना है तो इसका परिणाम ये होगा कि जब वह रिटायर होंगे तो बड़े खुश होंगे।

हमारे एक करीबी हैं। वह जब रिटायर हुए तो इतना खुश हुए कि पूछिये मत। कहते हैं कि जब सुबह आँख खुलती है तो इस बात की खुशी होती है कि चलो अब ऑफिस नहीं जाना है। वर्ना ऑफिस वाले जब रिटायर होते हैं तो ज़िन्दगी से रिटायर होते हैं और चक्कर में रहते हैं कि कहीं से पैसा कमाने का कोई धन्धा मिल जाए और फिर गुनाहगारों और नाफरमानों के बीच बैठें। इसलिये कि दिल रंग जाते हैं और फिर वैसी ही मिजाज़ बन जाता है। आदमी जैसी संगत में रहेगा वही मिजाज़ पाएगा। इसलिए ऐसी संगत से बचने की हर समय चिन्ता करनी चाहिये कि किस तरह से अल्लाह छुटकारा दे। इसी फायदे के लिये आप सल्ल0 ने कहा भी कि तुम्हारा खाना अल्लाह से डरने वाले खाएं, इसलिए कि उसमें भी संगत का मामला है। जब आपके घर में नेक बन्दे आएंगे तो उसमें आपका फाएदा होगा। वह आपको देखेंगे और आप उनकी संगत में बैठेगें तो आपको दुआ मिलेगी। इससे मालूम हुआ कि ऐसे लोगों को खिलाने की चिन्ता होनी चाहिए। अच्छे लोग हमारे दस्तरख्वान पर खाना खाएं, ये बात भी आजकल ख़त्म हो गई है। आज तो बड़े–बड़े ओहदेदारों को बुलाया जाता है और यदि किसी बड़े–बुजुर्ग को बुलाते भी हैं तो गर्व इतना कि दूसरे से कहते फिरते हैं कि मेरे यहाँ ये आते हैं वो आते हैं। बस नीयत ख़राब कर ली। खूब समझ लें कि संगत निःस्वार्थ होनी चाहिए और खाना भी हलाल का खिलाना चाहिये। ऐसा नहीं कि उल्टा सीधा खिला दे। उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। स्वयं जिसने खिलाया है उसको भी नुकसान होगा और जिसने खाया है उसको भी नुकसान होगा। खाना हलाल खिलाना चाहिये और निःस्वार्थ खिलाना चाहिए।

❑❑

आदर्श शासक

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

एक आदमी सर पर लकड़ियों का गट्ठर लिये चला जा रहा था। आश्चर्य ये कि समस्त अरब जानता था कि इस आदमी के पास चार सौ गुलाम हैं। रूपये–पैसे की बहुतायत है, लम्बा–चौड़ा कारोबार है, फिर भी उसे सामान ढ़ोने की क्या आवश्यकता?

इस्लाम में अपना काम स्वयं करने पर खूब उभारा गया है। हमारे रसूल मुहम्मद सल्ल0 जो सारे जहाँ के सर्वश्रेष्ट और सर्वोत्तम व्यक्ति थे, वह भी अपना काम स्वयं करते थे। अपने फटे कपड़े सीते, जूते फट जाने पर उसे दुरुस्त करते, बकरी का दूध दूहते आदि।

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 घर पर होते तो किसी नौकर को आटा गूंधते देखते तो उनके साथ बैठ जाते और आटा गूंधने में लग जाते।

खैर! बात उन साहब की हो रही थी जिन्होंने सर पर लकड़ियों का गट्ठर लाद रखा था। जो साहब सर पर गट्ठर लाद हुए थे वह उस समय के विश्व के सबसे बड़े शासक थे। क्षेत्रफल की दृष्टि से भी वह सबसे बड़े साम्राज्य के मालिक थे। और तो और वह तमाम मुसलमानों में सबसे धनी व्यक्ति भी थे। लोगों ने इस हालत में देखा तो सलाम अर्ज किया और बोले अरे! अमीरुलमुमेनीन! आपने सर पर भारी गट्ठर क्यों लाद रखा है? अमीरुलमुमेनीन हज़रत उस्मान रज़ि0 ने जवाब दिया, मेरे प्यारे दोस्तो! मैं अपने दिल को आज़मा रहा हूँ, और देख रहा हूँ कि लोगों के सामने अपना काम करने में मुझे झिझक तो महसूस नहीं होती।

हज़रत उस्मान रज़ि0 का अपने मन को भाँपने के साथ–साथ मुसलमानों को एक बार फिर ये सबक याद दिलाना मकसद था कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 भी अपना हरेक कार्य स्वयं अपने पवित्र हाथों से करते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि0 बड़े ही नर्म दिल और शर्म व हया वाले थे। और सबसे बड़ी बात कि बड़े ही दानशील थे। इस्लाम के प्रचार–प्रसार और मान–सम्मान हेतु दिल खोल कर खज़ाना लुटाते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के दामाद थे। आप सल्ल0 की दो बेटियों की शादी उनसे हुई थी। एक के निधन के बाद दूसरी बेटी से शादी की। हज़रत उस्मान रज़ि0 अल्लाह से बहुत डरने वाले थे। खासतौर से अज़ाबे कब्र से। जब भी कब्र की चर्चा होती तो आप इतना रोते की दाढ़ी तर हो जाती।

हज़रत उस्मान रज़ि0 अपने शासनाधिकारियों को सख़्त ताकीद करते थे कि जनता के साथ वह दया तथा प्रेम भाव से पेश आएं। अधिकारियों को सदैव चेताया करते कि वह केवल तहसीलदार होकर न रह जाएं बल्कि टैक्स वसूली के साथ उन्हें आराम भी पहुँचाएं। लगान आदि की वसूली के साथ इस ओर विशेष ध्यान दें कि भूमि सुधार तथा निर्माण कार्य में ढ़िलाई न होने पाये।

उन्होंने यात्रियों के लिये सड़कें, सरायं और कुएं खूब ढेर सारे बनवाए, ताकि उन्हें तनिक भी कष्ट न हो। उनका नियम था कि जुमे की नमाज़ से पहले ऐलान करत थे कि यदि किसी को कुछ कहना हो अथवा किसी गवर्नर या अधिकारी की शिकायत करनी हो तो बिला झिझक करे। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष हज के समय अधिकारियों को तलब करते

शेष पृष्ठ .....37 पर

मुस्लिम समाज

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—अनु0 मुहम्मद अदील अख़्तर

यह बात कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अपना समझे और उसके फायदे को वही अहमियत दे जो अपने फायदे को देता है, एक ख्वाब बन चुकी है, जिसका इल्म किताबों में होता है या जेहन में एक धुन्धला तसव्वुर लाया जा सकता है, हालांकि एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान को अपना भाई समझना वह ताक़त है जिस पर मुसलमानों की शिराज़ह बंदी का बड़ी हद तक इन्हिसार है, और इससे मिल्लत की तारीख में बेशुमार कामयाबियाँ हासिल होने लगती है, और यह वह ताकत साबित होती है जिससे दूसरी मिल्लतें और क़ौमें मुस्लिम मिल्लत पर रश्क करती हैं।

उस भाई चारे में गोरे–काले का, आका–गुलाम का, दौलत मन्द–गरीब का, हाकिम व महकूम और ताकतवर कमज़ोर का फर्क खत्म हो जाता है। जिस की मिसाल इससे मिलती है कि बिलाल हब्शी रज़ि0 सुहैब रूमी रज़ि0, सलमान फारसी रज़ि0 और अबु बक्र करशी रज़ि0, सब हजरत मुहम्मद सल्ल0 की कियादत में न सिर्फ इकट्ठा हो गये बल्कि दोस्त, साथी और हम प्याला व हम निवाला बन गये। गुलाम व आक़ा का फर्क उठा तो दुनिया ने यह नमूना भी देखा कि अजीमुल कदर मुस्लिम हाकिम खलीफ–ए–सानी उमर फारूक़ रज़ि0 बैतुल मक्दिस में इक्तेदार की बागडोर संभालने के लिए दाखिल होते हैं ओर खुद पैदल हैं, और उनका गुलाम सवारी पर, क्योंकि सवारी एक थी और एक के बाद दीगर इस पर बैठता था, लिहाजा वह कायम रही।

वतनियत का फर्क इस तरह मिटाया कि ईरानी नेज़ाद सलमान फारसी रज़ि0 इस्लाम में दाखिल होते हैं और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह करशी अरबी फरमाते हैं कि "सलमान हम में मिस्ल घर वालों के हैं" और आप सल्ल0 हज्जतुल विदाअ के मौके पर ऐलान फ़रमाते हैं कि अरब को अजम पर और अजम को अरब पर, गोरे को काले पर और काले को गोरे पर कोई बरतरी हासिल नहीं, सिवाये उसके जिसमें नेकी व एहतियात हो, सब आदम के बेटे हैं, और आदम की तशकील मिट्टी से हुई है। चुनांचि हुजूर सल्ल0 का लोगों के साथ मामला इसी के मुताबिक रहा। आपने अपने आज़ाद करदा गुलाम हज़रत जैद बिन हारिसा, और उनके बेटे उसामा बिन जैद से भतीजों और नवासों की तरह शफकत का मामला किया।

यह वह भाईचारगी थी जिसने दुनिया में एक इंकेलाब बरपा कर दिया, मशरिक से मगरिब तक उसके आसार व नतायज सामने आने लगे और एक ही बिरादरी में हिन्दी व तुर्की, रूमी व ईरानी, अरब व बरबर, मिस्री व हब्शी इकट्ठा हो गये। लेकिन आज हम फिर टुकड़ों मे बट गये हैं और हम को अपने रंग व नस्ल पर फख्र होने लगा है। फिर आपस में मज़ीद दूरी बढ़ गई है, आज हम एक दूसरे के मामले में खुद गर्जी और नफ्सपरस्ती का शिकार

हो चुके हैं, अपने फायदे को सिर्फ तरजीह देते ही नहीं, बल्कि अपने मफादात के सामने दूसरे के हर तरह के नुकसान की परवाह नही करते हैं। और हर मुसलमान का मिजाज सिर्फ अपने मफाद पर नजर रखना बन चुका है और हमारी मिल्ली ज़िन्दगी इस ऐब से तार तार है।

जरूरत इस वक्त सब से ज्यादा इस बात की है कि हम इंफेरादी मफादात की फिक्र इज्तेमाई मफादात को कुर्बान करके न करें और अपने फायदे के हुसूल में खुदगर्जी का सुबूत न दें, इसके लिये बेहतरीन उसूल वही है जो हुजूर सल्ल0 ने सुनाया कि "अपने भाई के लिये वही चाहो जो अपने लिए चाहते हो"। एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान को अपना भाई समझेगा तो उसके मफादात को नुकसान पहुँचाना तो बड़ी बात है, उसका किसी तरह नुकसान गवारा नहीं करेगा। उसकी बे इज्जती और बदनामी को कुबूल नहीं करेगा, न खुद उसके दिल को दुखायेगा और न किसी और को उसका दिल दुखाने देगा। बल्कि उसकी तरक्की से खुश होगा और उसके फायदे को एक हद तक अपना फायदा समझेगा। और अगर कोई तल्खी इत्तेफाकन पैदा हो जायेगी तो उसको नज़र अंदाज कर देगा, और किसी मौके पर अदावत के कुछ असबाब पैदा हो जाने पर कोशिश करेगा कि वह बातें असर अंदाज न हों और असर अंदाज हो जाये तो जल्द अज जल्द उनका इज़ालह हो जाये। उसके कारोबार को गिरने से बचायेगा। उसके सौदे में मुदाखलत करके अपना सौदा न शुरु कर देगा। उसकी खुशी व गम को अपनी खुशी व गम समझेगा।

यह वह बातें हैं जो किसी को भाई समझने की सूरत में खुद ब खुद जुहूर में आ जाती हैं। और उनमें से अकसर का अलहदा अलहदा हुक्म भी अल्लाह और उसके रसूल के इरशादात में मिल जाता है।

❑❑

सूचना

दारुल उलूम नदवतुल उलमा के शोबा दारुल इफ्ता व कज़ा में इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध हो गई है, अब दीनी व शरई मसाइल के हल के लिए बराह रास्त (सीधे) इसके ई-मेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है और सवालात भेजे जा सकते हैं।

e-mail: daruliftanadwa@gmail.com

धन्यवाद

ज़ीक़ादा और हज का सफर

—इदारा

ज़ीकादा का शुद्ध उच्चारण (तलफ़्फ़ुज) ज़ीक़अदः है। यह हिज्री कलेन्डर का ग्यारहवाँ महीना है, यह उन चार सम्मानित (मुहतरम) महीनों में से एक है जिन में अरब लोग जाहिलीयत के दौर से ही लड़ना–झगड़ना वर्जित ठहराए हुए थे। इस्लाम ने भी इसका सम्मान (एहतिराम) बाकी रखा। वह चार महीने यह हैं: मुहर्रम, रजब, ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा।

प्राचीन काल में यात्रा के साधन बहुत कम थे, लोग घोड़ों, घोड़ा गाड़ियों, बैल गाड़ियों, ऊँट और ऊँट गाडियों द्वारा दूर का सफर करते। हज के लिए जाते तो छः महीनों से अधिक लग जाते, उपलब्ध सवारियों से लोग कराची या बम्बई पहुँचते, फिर वहाँ से पानी के जहाज़ से जद्दा जाते, अर्थात जो हज का इरादा करता वह तैयारी आदि मिला कर साल भर लगा रहता, परन्तु इस आधुनिक काल में यात्रा की बड़ी सुविधाएं हो गई हैं। अब हमारे भारत देश से हाजी लोग इसी ज़ीकादा अपितु अन्तिम शव्वाल ही से हज की यात्रा आरम्भ कर देते हैं और हवाई जहाज़ द्वारा चार पाँच घंटों में जद्दा या मदीना मुनव्वरा पहुँच जाते हैं। अतः यह ज़ीक़ादा का महीना हमारे देश में हज के सफरों की गहमा–गहमी का होता है। उचित लगा कि इस मास के अंतर्गत हज के विषय में कुछ लिखा जाए।

हज उन तमाम बालिग़, आक़िल मुसलमानों पर जीवन में एक बार फर्ज़ है जो मक्का मुकर्रमा आने–जाने और हज के ज़माने का खर्च सहन कर सकते हों, साथ ही जिनका रोटी कपड़ा उन पर है, हज के ज़माने में उनके मौजूद न रहने पर उनका खर्च भी उपलब्ध हो, ऐसे मुसलमान अगर हज न करें तो अल्लाह की ओर से उनके लिये बड़ी वईदें (दन्ड की धमकियां) हैं। अतः अल्लाह तआला ने जिनको हज करने की कुदरत (सामर्थ्य) दी है वह हज करने में कोताही न करें।

हज की इबादत पहली बात तो यह है कि हर एक करता नहीं फिर जो करता भी है वह कहीं जीवन में एक बार, इसलिये इसके मसाइल सर्व साधारण लोग नहीं जानते, और चूंकि इस इबादत में बहुत खर्च होता है अतः यदि यह इबादत खराब हो जाए तो इसका दोहराना बहुत ही कठिन हो जाता है, लिहाज़ा जिसको अल्लाह तौफीक़ दे वह हज के सफर से पहले हज के मसाइल अच्छी तरह सीख ले, अगर पढ़ा है तो किताबों से, अन पढ़ है तो जानकारों से इसके मसाइल अच्छी तरह मनमें उतार ले। फिर भी अगर किसी जानकार का साथ रहे तो बहुत अच्छा है, वरना वहाँ जानकारों से हर मसअले को पूछता रहे और दुआ करता रहे कि ऐ अल्लाह! हज के अरकान अदा करना आसान फरमा और कबूल फरमा।

अपने गुनाहों से तौबा तो हर दिन और हर वक्त करना चाहिए। हज पर रवानगी से पहले भी करना चाहिये। गुनाहों में हुकूकुल इबाद अर्थात बन्दों से तअल्लुक रखने वाले गुनाहों की मुआफी–तलाफी की बड़ी कोशिश करनी चाहिए। सफर के जरूरी सामान और कागज़ात के साथ जब हवाई अड्डे पहुँचे तो मालूम करलें कि आप की उड़ान जद्दे

के लिए है या मदीना मुनव्वरा के लिये। अगर मदीना मुनव्वरा के लिए है तो नीयत करें कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के रौज़े की ज़ियारत करना तथा मस्जिदे नबवी की जियारत करना और उसमें नमाज़ें पढ़ना हैं। रास्ते में दुरूद शरीफ की कसरत रखें। मदीना मुनव्वरा पहुँच कर अपना सामान वगैरह अपनी कियाम गाह पर रख कर नहा–धोकर मस्जिदे नबवी में हाजिरी दें। मस्जिद के आदाब के साथ मस्जिद में दाखिल होते ही दो रकअत नमाज़ तहीयतुल मस्जिद की अदा करें, इसका एहतिमाम करें कि ऐसे वक्त न दाखिल हों जिसमें नमाज़ मक्रूह हो, अगर दाखिल होते ही किसी वक्त की जमाअत हो रही है तो उसमें शरीक हो जाएं, नमाज़ से फारिग हो कर कोशिश कर के लोगों के साथ रौज़े पर हाजिर हों, भीड़ के सबब वहाँ किसी के ठहरने की इजाजत नहीं होती है, चलत–चलते या मौका मिल जाए तो एक दो मिनट ठहर कर बड़े अदब से अल्लाह के रसूल सल्ल0 को नमाज़ वाला सलाम पेश करे "अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" फिर ज़रा आगे बढ़ कर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के ख़लीफा हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को सलाम पेश करे "अस्सलामु अलैक या ख़लीफ़तर्रसूलिल्लाह, फिर जरा आगे बढ़ कर खलीफ–ए–सानी हज़रत उमर (रज़ि0) को ये सलाम पेश करे अस्सलामु अलैकुम या अमीरल मोमिनीन उमर रज़ि0। अगर आप पढ़े लिखे नही हैं और जियादा अलफाज़ से सलाम पेश करने में दुश्वारी महसूस करते हैं तो रौज़े के तीनों गोल सूराखों की सीध से गुजरते हुए तीनों जगह बड़े अदब से "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" कह लें तब भी सलाम हो गया। जितने दिन मदीना मुनव्वरा में कयाम रहे, पाँचों वक्त की नमाज़ जमाअत से मस्जिद में पढ़ें और मौका निकाल कर रौजे पर हाजिर हो कर सलाम पेश करें। और जिस कदर दुरूद व सलाम पढ़ सकें उसमें कोताही न करें।

आम तौर से मदीना मुनव्वरा में इतने दिन ठहराया जाता है कि हज करने वाला मस्जिदे नबवी में चालीस फर्ज़ नमाज़ें जमाअत के साथ अदा कर सके, बहुत से हिम्मत वाले लोग इन दिनों में तहज्जुद व इशराक भी मस्जिद नबवी में अदा करके सवाबों का अम्बार जमा कर लेते हैं। मदीना मुनव्वरा का कयाम पूरा कराके हज के लिए सऊदी इन्तिजामिया हज के मुसाफिरों को बसों के जरिये मक्का मुकर्रमा हज की अदाएगी के लिये पहुंचाती है।

हज तीन तरह से अदा किया जाता है।

1. इफ्राद– इसमें हज की नीयत से एहराम बाँधा जाता है और हज अदा किये बिना एहराम नहीं खुलता और बीच में उम्रा नहीं किया जाता।

2. किरान– इसका एहराम बाँधते वक्त उम्रा और हज दोनों की नीयत की जाती है और मक्का मुकर्रमा पहुँच कर उम्रा किया जाता है मगर न सर मून्डा जाता है न एहराम से अलग हुआ जाता है, बल्कि उसी एहराम से हज अदा किया जाता है।

3. तमत्तोअ– इसमें पहले मीकात पर उम्रे का एहराम बाँधा जाता है, फिर उम्रा करके सर मुंडा के एहराम से बाहर आ जाते हैं, फिर 7 या 8 जिलहिज्जा को हज का एहराम बाँध कर हज अदा किया जाता है, हमारे यहाँ के अक्सर हाजी यही हज करते हैं इसलिए इसका बयान लिखा जाता है।

पूरे सामान के साथ बस आपको लेकर मदीना तय्यिबा से रवाना होगी, नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम पर सलाम पढ़ कर दुरूद पढ़ते हुए सफर की दुआ पढ़ कर मदीने से रवाना हों, थोड़ी ही देर बाद वह जगह आएगी जहां आपको एहराम बांधना है।

मक्का मुकर्रमा के चारों ओर कुछ मक़ामात मुक़र्रर हैं जहाँ दुनिया भर के हज व उम्रा के मुसाफिर एहराम बाँध कर ही मक्के की ओर बढ़ते हैं, इन जगहों को मीक़ात कहते हैं अगर कोई हज करने वाला या उम्रा करने वाला मीक़ात से एहराम बाँधे बिना मक्का मुकर्रमा चला जाए तो उस पर मक्का मुकर्रमा में एक कुर्बानी जरूरी हो जाती है और हिल (हरम की सीमा के बाहर) जा कर एहराम बाँधना होगा।

जिस मीक़ात पर आप पहुँचे हैं इसका नाम जुलहुलैफा है, इसको बिअरे अली भी कहते हैं। अल्लाह जजाए खैर दे सऊदी हुकूमत को। यहाँ एक काफी लम्बी चौड़ी मस्जिद है और बड़ी संख्या में गुस्ल खाने हैं, कोई बीमारी वगैरह का उज्र न हो तो यहाँ अच्छी तरह नहा कर एहराम की चादरें पहन लें। औरतें आम कपड़े में रहेंगी। अब आप दो रकअंत नमाज़ पढ़ें और सलाम फेर कर नीयत करें कि ऐ अल्लाह! मैं तुझ को राजी करने के लिए उम्रे की नीयत करता हूँ, मेरे लिए उम्रा आसान कर दे और फिर ज़ोर से तल्बिया पढ़े :

"लब्बैक अल्ला हुम्मा लब्बैक् लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल् हम्द वन्निअ्मत लक वल् मुल्क़ लाशरीक लक"। अब आप तुरन्त सर खोल दें और उम्रा पूरा होने तक सर न ढकें, न सोते में न जागते में। अब आप एहराम में हैं। याद रहे सिर्फ चादरें बाँध लेने से आप एहराम में नहीं आते जब तक नीयत करके तल्विया न पढ़ लें। औरतें भी इसी प्रकार नीयत के बाद एहराम में आ जाएंगी अलबत्ता वह सर न खोलेंगी चेहरा खोलेंगी मगर कोई गैर आदमी सामने आ जाए तो चेहरे को पंखे या दफ्ती आदि से आड़ कर लिया करेंगी, अब आप ज़्यादा से ज़्यादा तल्बिया पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा हाजिर हों, वहाँ भी अपनी जगह पर सामान आदि सुरक्षित करके हरम की मस्जिद जाएं, काबे पर नज़र पड़ते ही खूब दुआएं करें और फिर हजरे अस्वद के पास पहुंच कर इस तरह रूकें की हजर आपके बाईं ओर हो, फिर कहें कि ऐ अल्लाह! मैं तवाफ की नीयत करता हूँ, इसे आसान कर दे। फिर हजर की ओर मुँह करके दोनों हाथ हजर की तरफ बढ़ाएं, अगर करीब हों तो हजर को छू कर चूम लें दूर हों तो सिर्फ़ इशारा कर के अल्लाहु अकबर कहें और सीधे हो कर लोगों के साथ तवाफ करें, इस तवाफ में आप को रमल यानी तीन चक्करों में जरा अकड़ कर चलना है और सातों चक्करों में अपनी चादर दाहिने कन्धे के नीचे से निकाल कर बाएं कन्धे पर डालें रहें। औरतें न रमल करेंगी न इजतिबाअ, हर चक्कर में हजर की सीध में पहुँच कर उसकी ओर अल्लाहु अकबर कहते हुए हाथ उठाना है, तवाफ में तल्बिया नहीं पढ़ेंगे मगर खूब दुआएं करेंगे "रब्बना आतिना फिददुनिया हसनतंव व फिल आखिरति हसनतंव व क़िना अज़ाबन्नार" खूब पढ़ना चाहिए। आज कल भीड़ में कभी हजर की सीध नहीं मालूम हो पाती, उसके लिये हजर की सीध में हरी बत्ती जला दी गई है। जब सात चक्कर पूरे हो जाएं तो आप का एक तवाफ पूरा हो गया, अब जहां जगह मिले दो रकअ़त नमाज़ पढ़िये, यह नमाज़ वाजिब है। अब आप ज़मज़म पीकर सफा पहाड़ी की ओर जाएं और सई की नीयत से सई शुरु करें, सफा से मरवा पहुँचे यह एक शौत कहलाता है फिर मरवा से सफा आएं, यह दो शौत हुए इसी तरह

सात शौत पूरे करें जो मरवा पर पूरे होंगे। सई में भी खूब दुआएं करें। सफा व मरवा के बीच लगभग 600 मी0 का फासिला है इसके बीच दो हरी बत्तियाँ जलती हैं, मर्दों के लिए इसमें दौड़कर चलना है, और जब सई पूरी हो जाए तो आप सर मुंडा लें या कतरवा लें, औरतें एक दूसरे की चोटी से एक अंगुल बाल काट दें आपका उम्रा पूरा हो गया, अब आप आम कपड़ों में आ जाएं और अपने कियाम की जगह जाएं और अल्लाह जितनी तौफीक़ दे हरम में हाज़िर हों और जितनी तौफीक़ मिले तवाफ करें।

आठ जिलहिज्जा की सुब्ह को आपको मिना ले जाया जाएगा। अब आप नहा धोकर फिर दोनों चादरें पहन कर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर नीयत करें कि ऐ अल्लाह! मैं हज की नीयत करता हूँ, तू इसे मेरे लिए आसान कर दे। और फिर सर खोल कर तल्बिया पढ़ें औरतें भी जैसे उम्रे की नीयत की थी अब हज की नीयत कर के एहराम में आ जाए

याद रहे एहराम चाहे उम्रे का हो या हज का इसमें हर तरह के गलत कामों से बचना जरूरी है, बाल उखाड़ना, काटना, जुएं आदि मारना, खुशबू लगाना और मर्दों के लिए सिले कपड़े पहनना भी एहराम में मना है।

लब्बैक की कसरत रखें, मिना पहुँच कर जिक्र व दुआ में लगे रहें, नमाज़ें जमाअत से पढ़ें और खूब लब्बैक पढ़ें। 9 की सुब्ह को आप को अरफात ले जाया जाएगा, अरफात 9 को पहुँचना हज के अहम फर्जों में से एक है। वहाँ जुहर की नमाज़ जमाअत से पढ़ें, वहाँ जुहर व अस्र एक साथ पढ़ते हैं। और दो–दो रकअत पढ़ी जाती हैं, लेकिन हमारे यहां के आलिम कहते हैं कि अगर नुम्रा मस्जिद में जमाअत से पढ़े तो ऐसा करे वरना अपने अपने खेमे में दोनो नमाज़ें अपने वक्त पर पढ़ें और मुसाफिर न हों तो पूरी पढ़ें आप इस चक्कर में न पड़ें जैसे लोग पढ़ें आप भी पढ़ लें और पूरे दिन दुआओं में रहें। मगरिब बाद आप को मुजदल्फ़ा लाया जाएगा लेकिन मगरिब की नमाज अरफात में नहीं पढ़ी जाती बल्कि मुजदल्फ़ा में मगरिब व इशा दोनों साथ पढ़ी जाती हैं। मुजदल्फ़ा की रातं अहम रात है खूब दुआ करना चाहिये, मुजदल्फ़ा में फज्र पढ़ कर मिना वापस होंगे। इस दिन भीड़ के सबब कोई सवारी नहीं मिल पाती है पैदल मिना आना होता है। अच्छा ये है कि हर शख्स मुजदल्फा में छोटी छोटी 49 कंकरियां चुन ले मिना पहुँच कर सात कंकरियां लेकर जमरात जहाँ रमी की जाती है यानी मुक़र्रर खम्बों पर कंकरियां मारी जाती हैं, इन खम्बों को जमरा कहते हैं, यह तीन खम्बें बल्कि आजकल दीवारों की शक्ल में हैं लोग इनको छोटा, मंझला और बड़ा शैतान भी कहते हैं, 10 की सुब्ह को जमर–ए–उक़्बा (बड़े शैतान को कंकरी मारी जाएगी) एक कंकरी चुटकी में पकड़ कर बिसमिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर मारना चाहिये, सातों कंकरियां सात बार में मारना जरूरी है। कंकरी मार कर लौटे तो कुर्बानी करें, कुर्बानी कर के सर मुंडाए, औरतें पहले की तरह एक दूसरे के बाल काट दें। अब नहा–धो कर आम कपड़े पहन कर हरम जाएं और तवाफे जियारत सई के साथ करें, यह तवाफ भी हज के अहम फर्जों में से एक है और यह तवाफ 12 जिलहिज्जा की मगरिब से पहले हो जाना चाहिये।

ग्यारह को तीनों जमरात (शैतानों) को सात–सात कंकरियां सात–सात बार में मारना है, 11,12 को कंकरियां जुहर के बाद मारना चाहिए। कंकरियां मारने में जो माजूर हों उसकी तरफ से कोई दूसरा भी मार सकता है।

शेष पृष्ठ .....32 पर

इस्लाम पर दुश्मनों के हमले

—मौ0 डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

विरोधी इस्लाम के विरोध में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चाहे जितने षडयन्त्र रचें, उसे प्रतिक्रियावादी और आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला मजहब (धर्म) बताएं, परन्तु कभी वह इस्लाम के मिटाने के षडयंत्र में सफ़ल नहीं हो सकते। अल्लाह का यह दीन शाश्वत तथा कियामत तक बाक़ी रहने वाला है। इस का प्रबन्ध पूर्ण तथा सम्पूर्ण है। इस्लाम जैसे अल्लाह ने भेजा उसी प्रकार सुरक्षित है, न उसमें कोई कमी की गई हैं न कुछ बढ़ाया गया है। वह सदैव चमकता व दमकता रहेगा। लोगों के दिलों को लुभाता और उन को ईमानी गिज़ा (आहार) उपलब्ध कराता रहेगा। क्या पूरब क्या पश्चिम, क्या उत्तर क्या दक्षिण हर ओर के लोग इसको अपने दिलों में स्थान देते रहेंगे। और इससे जुड़ते रहेंगे, और वह अपनी खोई आत्मिक पूँजी इसमें पाते रहेंगे। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसको नकारा नहीं जा सकता। कितने ऐसे परिवार और घराने हैं जो असभ्यता, पशुता अति तथा अत्याचार के जाल में फंसे थे या फंसने वाले थे, इस्लाम ने उन पर ईमान की वर्षा की, जिससे उनके दिल की दुनिया बदल गई और उनको नवजीवन की दौलत मिल गई। और पूरा परिवार जो निराशा के पहाड़ के नीचे दबा हुआ था ईमान की हरी भरी बगिया में आ गया। जहाँ शान्ति तथा सम्मान की बौछार थी, तथा ईमान व यक़ीन के दीप जल रहे थे। पवित्र कुर्आन और हदीसे नबवी (नबी के वाक्यों) में ईमान पर जमे रहने वाले लोगों को जन्नत की शुभ सूचना दी गई है। पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला कहते हैं: अनुवाद– "जिन लोगों ने दिल से मान लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर जमे रहे, उन पर फरिश्ते उतरेंगे और कहेंगे कि तुम न कोई चिन्ता करो न दुखी हो, तुम जन्नत के पाने पर खुश रहो जिस का तुम से पैगम्बरों (सन्देष्टाओं) द्वारा वचन दिया जाया करता था, और हम तुम्हारे साथ थे, सांसारिक जीवन में भी और आखिरत में भी साथ रहेंगे, और तुम्हारे लिये उस जन्नत में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा उपलब्ध रहेगी तथा तुम्हारे लिये जो चाहोगे उसमें उपलब्ध है"।

पवित्र कुर्आन की यह शुभ सूचना बड़ी महान है। इसके महत्व की वास्तविकता उन्हीं ईमान वालों के समझ में आएगी जिन्होंने कुर्आन के प्रकाश में दीन और उसकी माँगों को समझने की यथा शक्ति चेष्ठा की हो और व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में उनके नियमों को बरता हो। इसी ईमानी सत्य से उस की समस्याओं का समाधान हो सकता है। कठिन से कठिन गुत्थियां सुलझ सकती हैं। आज यही ईमानी वास्तविकता सांस्कृतिक चुनौतियों से लड़ रही है, मन को मोहित करने वाली भौतिक वस्तुएं, सुन्दर नारे एवं पुकारें चारों ओर सुनाई देती हैं। परन्तु इस्लाम की वास्तविकता में कोई सन्देह न पैदा हुआ है न होगा। मिथ्या शक्तियां इस्लाम की मौलिक पहचानों पर आक्रमण करने की खूब चेष्ठा कर रही हैं। जब इन की कोई चेष्ठा असफल दिखाई देती है तो दूसरे नये भयंकर हथियारों द्वारा पुनः आक्रमण आरंभ कर देते हैं और मुसलमानों को इस्लाम से दूर कर देने के प्रयासों में कोई कमी नहीं रखते, परन्तु उन मिथ्या पुजारियों के द्वारा इस्लाम

मिटाने के जितने प्रयास होते हैं उतना ही इस्लाम बढ़ता जाता है और संसार को प्रकाशित कर रहा है।

आज अमरीका व यूरोप में इस्लाम के विषय में जो अवर्णनीय परिस्थिति है वह इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम विरोधी, इस्लाम को मिटा देना चाहते हैं, इस समय जो संसार में इस्लामी जागरूकता पैदा हो चुकी है इसके सामने दीवार खड़ी कर देना चाहते हैं, जब कि इस्लामी जागरूकता पढ़े, अनपढ़, मूर्ख, बुद्धिमान, निर्धन, धनवान हर एक को प्रभावित कर रही है। इस्लाम का यह प्रभाव अपना रंग दिखा कर रहेगा, इस लिए कि इस्लाम ही अल्लाह का प्रिय धर्म है।

इस्लाम के अतिरिक्त कोई व्यक्ति जो भी धर्म अपनायेगा वह निरस्त होगा और आखिरत (प्रलोक) में उसका सौदा बड़े घाटे का होगा। इस्लाम के न मिटने अपितु उसके उभरने का कारण यह है कि इस्लाम मिटाने वालों के सामने केवल सांसारिक लाभ है और सांसारिक लाभ क्षणिक है। ईमान के बिना आखिरत (प्रलोक) में कुछ लाभ न देगा बल्कि वहां उसका परिणाम बहुत बुरा होगा। यही लाभ रहित दृष्टिकोण इस्लाम के विरोधियों पर छाया हुआ है। न उनको लेखा जोखा का भय है न आखिरत में उत्तदायित्व की चिंता। इसी कारण वह अपराध और करने में निडर हैं। लूट तथा रक्तपात और मानवी बस्तियों को नष्ट करने की ध मकियां बराबर सुनने में आती हैं, और इस्लामी जगत उनकी आँखों का कांटा बना हुआ है। उनके द्वारा अफगानिस्तान व इराक़ में मानवीय बस्तियों को जला देने तथा पाप रहित मनुष्यों को मार देने और वहां की बहुमूल्य सामग्री को हथिया लेने का दृश्य संसार ने देखा और देख रहा है। इसी प्रकार पवित्र धरती फिलिस्तीन उनके रक्तपात से लहुलुहान है। परन्तु मीडिया द्वारा लोगों के मस्तिष्क को धोने की चेष्ठा की जा रही है। कभी मुसलमानों को आतंकवादी, उग्रवादी और कभी चरमपन्थी सिद्ध किया जा रहा है, कभी मुसलमानों को मानवी जनसंख्या के लिए भयभीत बताया जा रहा है। जब कि मुसलमान अमन व शांति के आवाहक एवं प्रेम तथा मेल जोल का झन्डा उठाने वाले हैं। यह एक ऐसी उम्मत है जिसे अल्लाह ने लोगों को लाभ पहुँचाने के लिए बनाया है। यह वह उम्मत है जो भलाई का आदेश देती है और बुराई से रोकती है, और अल्लाह पर ईमान रखती है। जब भी यह उम्मत अपनी उक्त विशेषताओं को छोड़ देगी और अल्लाह पर ईमान रखने से वंचित हो जाएगी तो फिर उस पर अल्लाह का प्रकोप होगा और उस वक्त उसको रोना धोना कुछ काम न आएगा। हदीस में लिखा है कि अल्लाह के रसूल ने बताया कि अल्लाह की कसम! तुम जब तक भलाई का आदेश देते रहोगे और बुराई से रोकते रहोगे (तुम्हारे लिए भलाई रहेगी) और अगर तुम यह काम छोड़ दोगे तो तुम दुआ करोगे तो दुआ कुबूल न होगी (हदीस का मफहूम)। उम्मत की विद्यमान दशा बड़ी ही दुखदाई है और ऐसा लगता है कि ईर्ष्या, पारस्परिक शत्रुता, छल–कपट आदि बुराईयाँ उसके मिज़ाज़ में प्रवेश कर गई हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि उसके पीछे रहने के यही कारण हों। आज मुसलमान हर स्तर पर बहुत ही बुरे दिखते हैं और उनका पिछड़ापन अपनी विशेषताओं को छोड़ने ही पर आया है।

आज सर्व प्रथम आवश्यकता यह है कि यह मुसलमान उम्मत (सम्प्रदाय) अपने में वह विशेषतायें पैदा करे जो उसको वास्तविक मुसलमान बनाती है। इस्लाम के आवाहकों तथा दीन के चिंतकों के अथक प्रयासों से यह बात मन

में आती है कि मौजूदा इस्लामी जागरूकता मुसलमानों के खोये हुए पद तथा स्थान पा लेने की राह खोल रही है, और मुस्लिम उम्मत (सम्प्रदाय) को पूर्ण संतुलित मार्ग वाली क़ौम बनाने की सुविधा उपलब्ध करा रही है और इन्शाअल्लाह ऐसा ही होगा। आने वाले काल इस्लाम और मुस्लिम उम्मत के नाम से जाना जायेगा।

इस्लाम के दुश्मनों ने अपने यहां इस्लामी जागरूकता देख कर यह आभास किया है कि इस्लामी दौर आने वाला है, वह इस चिंता में हैं कि यदि शासन की बागडोर मुसलमानों के हाथ में आ गई तो हमारा क्या होगा? इसलिए इस्लाम के दुश्मनों ने तय किया है कि इस्लाम को किसी तरह पनपने नही देना है, और उसके पुनः जागरण में रुकावटें खड़ी की जा रही हैं। इसलिए की इस्लामी तअ़लीम अल्लाह पर ईमान, तथा पवित्र जीवन बिताने, बुराईयों से बचाने और अल्लाह की मदद का सहारा लेने से सुसज्जित है। परन्तु इन गुणों को छुपाने के लिए इस्लाम के शत्रु मुसलमानों पर आतंकवाद का आरोप लगा कर उनको बदनाम करने की चेष्ठा कर रहे हैं। इसी पर बस नहीं बल्कि वह दुनिया को यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि मुसलमान सांसारिक उन्नति चाहे वह आर्थिक हो या वैज्ञानिक, सामाजिक हो या टेक्नॉलोजिक उसमें रुकावट बन रहे हैं। इस दर्शन को विशेष समस्या बनाने के लिए अपने तन मन धन से प्रयास कर रहे हैं। Nine Eleven की घटना इसी सिलसिले की एक कड़ी है, जिसे इस्लाम दुश्मनों ने करके मुसलमानों पर थोप दिया।

इन आरोपों में इस्लामी देश उन का सर्वप्रथम निशाना हैं। कारण यह है कि इस्लामी देश खनिज पदार्थों से परिपूर्ण हैं। इस्लाम दुश्मन बहाने से उनपर क़ब्ज़ा करना चाहते हैं। अफगानिस्तान इस का स्पष्ट उदाहरण है।

जब इन देशों पर इनका क़ब्ज़ा हो जाएगा तो वहां की खनिज सम्पदा उनके अधिकार में हो जाएगी। इस प्रकार उनके ख्याल में प्रोटोकोल का सपना पूरा होगा और वह सांसारिक जीवन में उच्च स्तर पर होंगे। परन्तु यह समस्त चेष्टायें इस्लामिक जागरूकता को रोक नहीं सकतीं।

"फूकों से यह चिराग़ बुझाया न जायेगा"

इन्शा अल्लाह कियामत से पहले एक बार संसार पर इस्लामिक सत्ता स्थापित होकर रहेगी।

❑❑

ज़ीक़ादा और हज.....

12 को मगरिब से पहले मिना का खेमा छोड़ दें, इस रोज़ भी सवारियां नहीं मिलती हैं, पैदल अपनी कियाम गाह आना होता है। अब आप जब तक मक्का में रहें हरम की हाजिरी और तवाफ़ की सआदत हासिल करें। जब रुखसती का वक्त आए तो तवाफे वदाअ़, (रुखसती) का तवाफ करके मक्का मुकर्रमा छोड़ें कि यह वाजिब है। अलहमदु लिल्लाह आप का हज पूरा हो गया, अल्लाह कबूल फरमाए और मुबारक करे।

अगर आपका जहाज़ पहले जद्दा ले जाए और पहले हज का मौका मिले तो आप अपने हवाई अड्डे ही से एहराम बाँध लें, और नियत कर के लब्बैक कह लें इसलिए कि आप की मीकात जद्दा से पहले आएगी और जहाज़ में एहराम बाँधने में दुश्वारी होगी, जद्दे से मक्का मुकर्रमा हाज़िरी होगी, पिछले बयान की तरह उम्रा व हज करें और जब मदीना तय्यिबा हाज़िरी हो, वहाँ भी पिछले बयान की तरह वक़्त गुजारे।

अल्लाह तआला आपको हज व ज़ियारत की बरकात से खूब–खूब नवाज़े।

❑❑

नए निज़ाम के क़याम का नया साम्राज्यवादी मंसूबा

—मौ0 मुहम्मद वाज़ेह रशीद नदवी

दुनिया का सियासी नक़्शा बड़ी तेज़ी से बदल रहा है, इस मौजूदा मंज़र नामा को "निज़ामहाय हुकूमत की तब्दीली" का नाम दे सकते हैं, "नया आलमी निज़ाम" (New World Order) का नअ़रा सबसे पहले साबिक़ अमरीकी सदर बुश ने अपने अ़हदे इक़्तिदार में बुलन्द किया था, जिसके बाद पश्चिमी साम्राज्यवाद ने मुख़्तलिफ मुल्कों में निज़ामे हुकूमत बदलने की कोशिश की और अपने मुवाफिक़ मोहरे बिठाये और इस मक़सद के हुसूल के लिये अपने ना पसन्दीदा हुक्मरानों के खिलाफ अवामी बग़ावतें कराईं, मौजूदा वक़्त में अवामी इन्क़िलाब की तूफानी आँधियों का पहला निशाना ट्युनिस और फिर मिस्र बना, बहरीन भी उसकी ज़द में आया, सऊदी अ़रब के बाज़ शहरों से भी इस तूफान बलाख़ेज़ की लहरें टकराईं, लेकिन खादिम अल हरमैन अश्शरीफ़ैन शाह अब्दुल्ला बिन अब्दुल अज़ीज़ की बेरोज़गारी, फक्रों अफ़लास के ख़ात्मे के लिये किये जाने वाले फ़य्याज़ाना स्कीम से ये तूफान थम गया, फिर यमन व शाम इस बग़ावत की ज़द में आये और इत्तिलाआ़त के मुताबिक यहाँ अभी तक मौजूदा निज़ाम के खिलाफ मुज़ाहरे और पुरतशद्दुद इहतिजाज जारी है। मिस्र व टयुनिस में मुद्दतों दराज़ से क़ायम इस्तिबदादी निज़ाम ख़त्म हो गया और मौरसी हुक्मरानों को इक़्तिदार से बेदख़्ल होना पड़ा, जो तीस साल से कुर्सी इक़्तिदार पर क़ाबिज़ थे, और अपने आप को मतलकुल इनान फरमा रवा समझते थे और इस बात का मुज़ाहिरा करते थे कि वह मुल्क के दस्तूरे आईन की बुनियाद पर क़ौम के मुन्तख़ब नुमाईन्दे हैं और हर इन्तिख़ाब में उनकी मुद्दते इक़्तिदार की तौसी हो जाती थी, इस तरह इक़्तिदार में बाक़ी रहने का मौक़ा उन्हें बा आसानी हाथ आ जाता था, इसलिए की मुल्क के आईन में उनकी मुद्दते इक़्तिदार की तौसी व तजदीद पर किसी क़िस्म की कोई पाबन्दी नहीं, इक़्तिदार की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ की इस पॉलीसी पर किसी सियासी इदारा और बैतुल अक़वामी दस्तूर साज़ तन्ज़ीमों को हत्ता की यूरोपी मुमालिक को भी कभी कोई एज़तराज़ नहीं हुआ, जिनके नज़दीक इक़्तिदार तक पहुँचने और उसके क़ायम रखने का ये एक कारगर हरबा है, लेकिन अचानक इन मुल्कों में यूरोपी मुमालिक और खास तौर से अमरीका के हलीफ हुक्मरानों के खिलाफ बग़ावत का एक सैलाब आता है और आन की आन में उनकी हुकूमत का शीराज़ह तारे अन्कबूत की तरह बिखर जाता है, हालांकि इन हुक्मरानों को यूरोप बल्कि अमरीका की भी भरपूर ताईद और हिमायत हासिल थी, बिल आख़िर इन्क़िलाब व बग़ावत की इस आँधी ने लीबिया का रुख किया और आज भी वहां इन्क़िलाबियों और इसतिबदादी निज़ाम के दरमियान खूनी तसादुम जारी है, सैकड़ों जाने इसकी वजह से लुक़म–ए–अजल बन रही हैं, इस नाम निहाद अवामी इन्क़िलाब ने बाक़ाइदा मसल्लह जंग की शक्ल इख़्तियार कर ली है, अमरीका फ्राँस, बरतानिया और यूरोप के दीगर मुमालिक की जानिब से 35 साल से क़ायम आमिराना निज़ाम से अवामुन्नास की जान व माल के तहफ़्फ़ुज़ के लिये इन्क़िलाबियों की हिमायत

और मदद की जा रही है, और नाटो की बमबारी जारी है, लेकिन अब तक हालात में किसी खुशगवार तब्दीली के आसार नज़र नहीं आते, बाहम तबादल–ए–ख़्याल और गुफ़्तगू का सिलसिला ताहनूज़ क़ायम है। किसी मुआहदे पर एक फ़रीक़ अगर रज़ामन्दी का इज़हार करता है तो दूसरा उससे इन्कार, हाँ इतना ज़रूर हुआ है कि इस इन्क़िलाब ने लीबिया में साम्राज्यवादी देशों को कदम जमाने के मौक़े फराहम कर दिये, साम्राज्यवादी देशों की इसी बेजा मुदाख़लत, ज़बरदस्ती के तआवुन और "मगरमछ के आँसू बहाने" (Crocodile Tears) पर बाज़ हलकों ने ना पसन्दीदगी का इज़हार किया है, इसलिए की ये पूरा इन्क़िलाब दरहक़ीक़त साम्राज्यवादी उद्देश्य की तकमील का एक नया साम्राज्यवादी मन्सूबा है।

आलमे इस्लाम में होने वाले मौजूदा इन्क़िलाब से 1956 ई0 में मिस्र का वह इन्क़िलाब याद आता है जब मिस्र के सदर जमाल अब्दुन्नासिर ने नहर स्वेज को नेशनालाईज़ करने का क़दम उठाया तो बरतानिया, फ्राँस और इस्राईल ने मिलकर मिस्र पर हमला कर दिया था, अगर सोवियत यूनियन की मुख़ालिफत और उसकी तरफ से फौरी जंग बन्दी की धमकी न होती तो बहुत मुमकिन था कि मिस्र एक बार फिर साम्राज्यवादियों के ज़ेरेनगीं आ जाता, जिसके ज़ालिमाना पन्जों से बड़ी कुरबानियों के बाद उसने आज़ादी हासिल की थी, क्योंकि फ़िज़ाई हमलों के ज़रिये हमला आवर मुमालिक ने मिस्र की हस्सास और अहम जगहों पर अपना तसल्लुत क़ायम कर लिया था, चूंकि सोवियत युनियन उस वक़्त अमरीका की तरह सुपर पावर था, पूरी दुनिया में उसकी हैबत क़ायम थी, और दूसरी दुनिया का नुमाइन्दा समझा जाता था। चुनांचि रूसी सद्र बलकानैन ने हमला आवर मुल्क को धमकी दी कि बारह घण्टे के अन्दर अपनी फ़ौजें मिस्र से हटा लें, वरना उसका रुख पेरिस व लन्दन की तरफ़ होगा और एक नई आलमी जंग की शुरुआत होगी। रूसी सद्र की इस धमकी के फौरन बाद फौरन जंग बन्द हो ग़ई और अमरीका ने आलमी जंग के ख़ौफ से जिसे अभी दस साल ही हुए थे मिस्री सरहदों से फौजों को हटाने की ज़िम्मेदारी ली। और जमाल अब्दुन्नासिर ने जब हिन्दुस्तान का दौरा किया तो उनका बहुत शानदार इस्तिक़बाल हुआ, ऐसा लगता था जैसे उन्होंने बड़ी ताकतों को शिकस्ते फाश दी हो इसलिये कि उन साम्राज्य विरोधी देशों में साम्राज्यवाद के जुल्म व सितम अभी जारी थे। ख़ास तौर से बरतानवी और फ्राँसीसी साम्राज्यवाद ने आपने मातहत मुमालिक में जुल्म व सितम के ऐसे पहाड़ तोड़े थे कि खुदा की पनाह, मातहत रिआया के साथ जानवरों सा सुलूक किया, इनके अक्दार व रिवायत की बखिया दरी की, इन की तहजीब व सक़ाफत के परखचे उड़ाए, उनकी रौशन तारीख के साथ खिलवाड़ किया, उनके माली ज़खाएर के स्रोत खुश्क कर दिये और उन्हें इन्तिहाई अपाहिज और मुफसिल मुल्क बना दिया और जब साम्राज्यवाद के इस जालिम शिकंजे से उन्हें रिहाई मिली तो उस वक़्त उन का हाल यह था कि वह दुनिया के सबसे कमज़ोर पसमान्दा और मुफलिस मुल्क थे।

चुनांचि जमाल अब्दुन्नासिर के इस बहादुराना कारनामे को उन मुमालिक ने कद्र की निगाहों से देखा, पूरे आलम ने चैन व सुकून की सांस लिया, उनकी फ़तह को अपनी फतह समझा इसलिए कि जमाल अब्दुन्नासिर ने पश्चिमी साम्राज्यवाद को मिस्र से ज़लील व ख़्वार वापस किया

था जिससे इन साम्राज्यवादी देशों को बड़ी रुस्वाई हुई, इसी ज़िल्लत व शिकस्त और एहसासे नाकामी का असर था कि बरतानवी वजीरे आज़म लार्ड एडन ने फौरन अपना इस्तीफ़ा पेश कर दिया था।

मिस्र की हिफ़ाज़त चुंकि सोवियत यूनियन की मरहूने मिन्नत थी, उसकी मुदाखलत की वजह से मिस्र अमरीकी व बरतानवी साम्राज्यवाद के नापाक अज़ाइम से बच रहा था, अपने इसी तआउन की वजह से सोवियत यूनियन तमाम साम्राज्यवाद विरोधी देशों और खास तौर से मिस्र का मुहसिन बन गया और उसी वक्त से तमाम साम्राज्यवाद विरोधी देशों से इसके ताल्लुकात खुशगवार हो गये और फिर उसके नतीजे में आलमे इस्लाम नीज़ आलमे अरबी में इश्तिराकी नज़रयात को बर्ग व बार लाने का सुनहरा मौक़ा हाथ आ गया और देखते ही देखते एशिया व अमरीका इश्तिराकी मुल्क बन गये। मिस्र व शाम इराक़, लीबिया, अलजज़ाइर व सूडान, यमन, सोमालिया और दीगर मुमालिक में इश्तिराकियत का पूरे तौर पर तसल्लुत काइम हो गया। इश्तिराकियत का यह क़बूले आम कोई अच्छी पेश रफ्त न थी बल्कि यह एक नई मुसीबत का पेश खेमा था, वह साम्राज्यवाद से कहीं ज़्यादा खतरनाक और इस्लाम दुश्मन थी इसलिए कि इसकी पहली चोट इस्लामी उसूल व आदाब और दीनी बुनियादों पर पड़ती है, और इश्तिराकियत का अज़ली हरीफ़ दर अस्ल मज़हब ही है।

आलमे अरब में नमूदार होने वाले मौजूदा इन्किलाबात से एक नये खतरे का एहसास होता है। गुजिश्ता पचास सालों में आलमे अरब में ऐसे अवामी इन्क़िलाब ज़ाहिर हुए उनमें से अक्सर ने बिलआखिर इश्तिराकी इन्किलाब की शक्ल इख्तियार की। वह इश्तराकी इन्क़िलाब जो यूरोप के सरमायदाराना निजाम का दुश्मन है, जिसके नतीजे में पश्चिमी यूरोप और पूर्वी यूरोप में सर्द जंग चल रही, लेकिन इन अरब मुमालिक ने इस्तिबदादी सियासत का निशाना इस्लामी तहरीकात बनीं, लेकिन कभी किसी इश्तिराकियत मुख़ालिफ मुल्क ने इस्लामी तहरीकात का साथ न दिया और इस्लामी तहरीकात पर जालिम हुक्मरानों ने गैर इस्लामी व गैर कानूनी पाबन्दियां आइद कीं, लेकिन इन मतलकुल इनान हुक्मरानों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई, इस्लाम पसन्दों को जेल की सलाखों के पीछे डाल दिया गया। सफ़्फ़ाकीयत व बरबरीयत का हर तरीका इन पर आजमाया गया। शाम में इख़्वानियों के खिलाफ हाफ़िज अलअसद ने फौजी कारवाई की और उन पर भारी बमबारी करके हज़ारों को मौत के घाट उतार दिया, लेकिन इन सब के बावजूद न यूरोपी मुमालिक की जानिब से कोई सदाए एहतिजाज बुलन्द हुई और न आलमी मीडिया में मजम्मत का कोई बयान शाये हुआ। मिस्र इराक़, शाम व यमन में जुल्म व बरबरीयत का यह सिलसिला अब भी जारी है, लेकिन पूरा यूरोप न सिर्फ यह कि खामोश है बल्कि इस इस्तिबदादी सियासत के अलमबरदारों को उसका पूरा तआउन हासिल है।

फिलिस्तीनियों पर इस्राईल के खूंचका मज़ालिम, उन तक सामाने रसद पहुंचने के तमाम रास्तों पर फौजी पहरा, गज़ह का इस्राईल मुहासरा और इसमें मिस्र का तआउन और सहयूनियों की नाजाइज व गैर इन्सानी कारवाइयों पर अकवामेमुत्तहिदा, अमरीका और इत्तिहादी मुमालिक की खामोशी को आखिर क्या मअना पहनाए जा सकते हैं? फिर आज 30 साल नही बल्कि 50 साल से घुन की

शेष पृष्ठ .....37 पर

अधूरा इंसाफ

—एम0ए0 खान

दुनिया इस वक्त जिस सियासी व साम्राज्यवादी ताकतों के जरिये फैलाये जा रहे बोहरान व कश्मकश से गुज़र रही है, इससे दुनिया का हर अमन पसन्द इंसान जो समाज को साफ–सुथरा और अच्छा देखना चाहता है, दुविधा में पड़ा है। आज अमेरिका और उसके हिमायती देश जिनमें खास कर ब्रिटेन, फ्रांस, इस्राईल व अन्य साम्राज्यवादी ताकतों के मक्कारी व फरेब तथा आधुनिक मीडिया के माध्यम से फैलाये जा रहे दुष्प्रचार तथा इस्लाम व मुसलमानों से अपनी ज़ाती नफरत व जलन व दुनिया भर के विभिन्न जाति व धार्मिक गरीबों व बेकसूर लोगों को अपना गुलाम बनाने व दुनिया भर में प्रकृति द्वारा उन इलाकों को दिये गये विभिन्न किस्म के खज़ानों को हड़पने व उन समस्त चीजों को केवल अपने–अपने देश के अमीर शहरियों की जागीर बनाने के लिए पूरी दुनिया के विभिन्न देशों में विश्वव्यापी अभियान छेड़े हुए हैं तथा इसी अभियान के तहत वो पूरी दुनिया खास कर मुस्लिम देशों पर अपनी ताकत के घमण्ड में अपनी जब्र व हैवानियत पर पहुँच रहा है, अमेरिका और उसके सहयोगी देशों द्वारा लाखों निहत्थे और बेगुनाह मर्दों, औरतों, बच्चों और बूढ़ों का दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कत्लेआम किया जा रहा है और ये सब कार्यवाही दहशतगर्दी (आतंकवाद) को खत्म करने के नाम पर की जा रही है।

अभी हाल ही में अमेरिका के द्वारा पाकिस्तान में किये गये ऑप्रेशन में ओसामा बिन लादेन का मारा जाना तथा अमेरिका व उसके सहयोगी देशों का इस पर खुशियां मनाना और ओबामा का अपने प्रशासन और फौजियों की पीठ थपथपाना बेमाना कदम मालूम होता है।

अगर अमेरिका व ब्रिटेन समेत इसके दीगर सहयोगी देश इंसाफ पसन्द होने का दावा करते हैं (जो हकीकतन इंसाफ पसन्द नहीं हैं) तो इनको चाहिए कि अपने देश के सियासी लीडरों, फौजी अफसरों व प्रशासन के जरिये ओसामा बिन लादेन की मदद में जिन लोगों का हाथ है उन पर ओसामा बिन लादेन की मदद करने का खुली अदालत में मुकदमा चलाकर सख़्त से सख़्त सजा दें, जिससे दुनिया के तमाम इंसाफ पसन्द लोगों को यकीन हो जाये कि अमेरिका और उसके सहयोगी देश सही मायनों में इंसाफ पसन्द हैं।

अमेरिका के जरिये से ओसामा बिन लादेन को दी गई मदद और इससे पीड़ित देशों जिनमें खास कर रूस व भारत समेत दुनिया के विभिन्न देशों को मिलकर चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ में अमेरिका और इसके सहयोगी देशों के खिलाफ आवाज़ बुलन्द करें, इस मौके पर रूस की चुप्पी आश्चर्यजनक है।

अमेरिका व उसे हिमायती देशों द्वारा दुनिया से दहशतगर्दी (आतंकवाद) को खत्म नहीं किया जायेगा क्योंकि ये इन देशों की पॉलिसी है, इससे इनके हाथियारों की बिक्री और दुनिया के विभिन्न देशों और उनके प्राकृतिक खजानों पर अपना कब्जा जमाने की एक सोची समझी चाल है।

अमेरिका और ब्रिटेन दुनिया के अव्वल दर्जे के जालिमों में शुमार होते हैं क्योंकि इतिहास गवाह है इनके जुल्म और हैवानियत का, "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" से लेकर आज तक इन देशों के दोहरे मापदण्ड हैं।

दुनिया में जब कभी कोई अमेरिकी या ब्रिटेन का नागरिक मारा जाता है तो इसके कातिल को दहशतगर्द (आतंकवादी) कहा जाता है, लेकिन जब अमेरिका और इसके सहयोगी देशों द्वारा प्रतिदिन फिलिस्तीन, इराक, अफगानिस्तान, लीबिया समेत दुनिया के दीगर देशों में अनगिनत बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं तो उनके क़ातिलों को दहशतगर्द नहीं कहा जाता क्यों?

लेकिन एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब दुनिया के लोगों को अमेरिका और उसके सहयोगी देशों की जेहनी गुलामी से निजात मिलेगी। अमेरिका व ब्रिटेन समेत इनके दीगर सहयोगी देशों द्वारा दहशतगर्दी (आतंकवाद) के खात्मे के नाम पर जो इन्हीं की पैदा करदा है कि आड़ में इस्लाम और मुसलमानों को नुकसान पहुँचाया जा रहा है और वो अपनी शैतानी फूंक से इस्लाम के चिराग को बुझाना चाहते हैं। वो जान लें कि इनकी ये शैतानी हरकत इस्लाम को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती, क्यों कि इस्लाम एक लाज़वाल दीन है जो क़यामत तक बाकी रहेगा, इस्लाम दुश्मनी में न जाने कितनी क़ौमों का सफेहस्ती से नामोनिशान मिट गया।

किसी ने क्या खूब कहा है--

किरदार से बनायें मेयारे ज़िन्दगी
हालात से हयात का सौदा न कीजिए।

❖❖❖

नए निज़ाम के क़याम.............

चक्की में पिस रहे अरब अवाम के साथ साम्राज्यवादी देशों की अचानक हमदर्दी आखिर क्यों? और कहाँ गया वह जराये अबलाग़, जब यह अवाम फ़क्र व इफ्लास की आग में तप रही थी, फिर आज आखिर ऐसी हमदर्दी व बही ख्वाही किस लिये? क्या यह सब इन मजलूम अवाम के जज़्बात का खून करके साम्राज्यवादी देशों के मकासिद की तक्मील का एक नया मन्सूबा नहीं? इस सवाल का यकीनी जवाब तो आने वाला समय और मुस्तक्बिल के हाल ही दे सकेंगे। लीबिया और दीगर अरब मुल्कों में अवामी इन्किलाब की हमदर्दी और हिमायत एक ऐसे नये निजाम की तमहीद है जो साम्राज्यवादी उद्देश्यों का मुहाफिज होगा। जिन मुल्कों में हुक्मरा तब्दील हो रहे हैं वहाँ की रिपोर्ट इसी बात की गवाह हैं और वहाँ इस्लाम पसन्दों को इक्तेदार से अलग रखने की मन्सूबा बन्द कोशिशें जारी हैं। ❑❑

आदर्श शासक ....

थे और फिर ऐलान कराते थे कि यदि किसी अधिकारी से किसी को कोई शिकायत हो तो निडर होकर कहे। आप रज़ि0 कहा करते थे कि मैं शक्तिशाली के मुक़ाबले में निर्बल के साथ हूँ।

आप रज़ि0 लोगों के साथ मिल--जुल कर रहते और बड़ी नर्मी से पेश आते ताकि उन्हें कुछ कहने में परेशानी न हो। दोपहर के समय मस्जिद में ही वास करते। चादर सिर के नीचे रख लेते और फर्श पर लेट जाते। उठते तो जिस्म पर कंकड़ियों के निशान बन जाते। किसी को कुछ कहना--सुनना होता तो मस्जिद में ही अपनी बात रख देता और आप वहीं निर्णय दे देते।

इतिहासकारों ने उनकी दानशीलता पर बहुत कुछ लिखा है, उसमें ये भी है क़ि वह लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते थे और स्वयं सिरका तथा तेल खाते थे। वस्त्र भी मामूली पहनते थे। पत्नियों को भी उत्तम वस्त्र धारण करने से रोक दिया था। अल्लाह ऐसे आदर्श शासकों की आदतें और प्रवृति हमारे शासकों में भी डाल दे ताकि दानवरूपी भ्रष्टाचार समाप्त हो। आमीन ❑❑

अहले ख़ैर हज़रात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमात में लगा हुआ है, इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से पिछले साल तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़े, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो गई। इस सूरते हाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधन कमेटी ने नये छात्रावास निर्माण का निर्णय लिया। अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरु भी हो गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्जिला होगा, 60 कमरे और 3 बड़े हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा सम्बन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें।

इस निर्माण कार्य पर 2,35,00,000 (दो करोड़ पैंतीस लाख) रूपये, और एक कमरे पर लगभग चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले ख़ैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा, हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे, ताकि दीनी तालिबे इल्म संतुष्ट होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें, हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुँचेगा।

मौ० मुफ़्ती मु० ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

मौ० मु० वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

प्रो० अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ० मु० हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

मौ० सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम, दारुलउलूम नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।	और इस पते पर भेजें।
NADWATUL ULAMA **A/C NO. 10863759733** **(State Bank of India Main Branch, Lucknow)**	**NAZIM NADWATUL ULAMA,** **P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,** **LUCKNOW-226007 (U.P.)**

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुईद अशरफ नदवी

मोबाइल से हो सकता है कैंसर

दुनिया भर में लोगों को एक दूसरे से जोड़ने का ज़रिया बना मोबाइल कैंसर का कारण भी बन सकता है! जी हां! विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के कैंसर विशेषज्ञों ने संभावना जताई है कि मोबाइल फोन के इस्तेमाल से मस्तिष्क कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। विशेषज्ञों ने इससे बचने के लिए संदेशों तथा ईयरफोन वाले हैंड फ्री उपकरणों का उपयोग करने की सलाह दी है।

कैंसर पर शोध करने वाली अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी (आईएआरसी) ने फ्रांस के ल्योन में आठ दिवसीय टेलीफोन न्यूज कांफ्रेंस के समापन पर कहा, इस तरह के उपकरणों के इस्तेमाल से रेडियो आवृत्ति विद्युत चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है। इससे लोगों को कैंसर होने की आशंका होती है।

कार्य समूह के अध्यक्ष जोनाथन समेट ने कहा, इस संबंध में किए गए शोध से जो प्रमाण मिले हैं, उसकी समीक्षा के आधार पर विशेषज्ञ इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मस्तिष्क में होने वाले ग्लिओमा एक प्रकार का मस्तिष्क कैंसर होता है। उन्होंने कहा कि पिछले दशक में व्यापक स्तर पर किए गए दो अध्ययनों में पाया गया है कि इसका अधिक खतरा उन लोगों में अधिक देखा गया जो मोबाइल फोन का ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोगों ने करीब दस साल की अवधि के दौरान प्रति दिन औसतन 30 मिनट अपने फोन का इस्तेमाल किया।

हाल के वर्षों में न सिर्फ़ मोबाइल की संख्या में बढ़ोतरी हुई बल्कि इनके इस्तेमाल किए जाने के समय में भी इजाफा हुआ है। वैज्ञानिक निष्कर्ष वायरलेस उपकरणों और कैंसर के बीच केवल संभावित संबंध को बताते हैं। आईएआरसी रिपोर्ट से जुड़े कुर्ट स्ट्रैफ ने कहा, ग्लिओमा और एकॉस्टिक न्यूरोमा कहे जाने वाले नॉन मेलिग्नैन्ट ट्यूमर के अन्य प्रकार का खतरा बढ़ने के कुछ प्रमाण हैं।

साईं बाबा का ख़ज़ाना— आँध्र प्रदेश के सत्य साईं बाबा के आश्रम में बने उनके निजी कमरे से 38 करोड़ का खज़ाना मिला है। 24 अप्रैल 2011 को साईं बाबा के निधन के करीब दो महीने बाद उनका निजी कमरा प्रशांति निलयम ट्रस्ट के सदस्यों, न्यायिक अधिकारियों और वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में खोला गया।

स्थानीय मीडिया के अनुसार इसमें से 98 किला सोना, 12 करोड़ रूपये नकद और 317 किलो चांदी मिली है। एक्साइज विभाग के अधिकारी फिलहाल सोने और चांदी का मूल्यांकन कर रहे हैं। कमरे से मिली नकदी को गिनने में 20 लोगों को लगभग 36 घंटे लगे।

कांग्रेस ने किया दिग्विजय के बयान से किनारा— कांग्रेस ने एक बार फिर पार्टी महासचिव दिग्विजय सिंह के बयान से खुद को अलग कर लिया है। सिंह ने बिन लादेन को समुद्र में दफन करने पर सवाल उठाते हुए कहा था कि अपराधी भले ही कितना बड़ा क्यों न हो, उसका अंतिम संस्कार धार्मिक रीति रिवाज से ही किया जाना चाहिए। ❑❑

Phone: 0522-2267429 (S) 2260671 (R)

MOHD. MIYAN JEWELLERS

एक भरोसेमन्द सोने, चान्दी के ज़ेवरात की दुकान

1-2, Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

Phone: 9415087427

अनस मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हम से सम्पर्क करें

कपूर मार्केट (मलिक मार्केट) विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

☎ Shop : 2266408
Residence: 2260884

IQBAL & CO.

Deals :
Friend Embroidery Machine
Deals in :
Embroidery Raw Materials
& Spare Parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala
Police Chowki, Chowk, Lucknow-226063

HAJI SAFIULLAH & SONS Jelwellers

Mohd. Aslam
Phone : 0522-4028050, 2268845
Mobile : 9454586265, 9839654567
9335913718

Nagina Market, Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad, Lucknow